प्रभु वीर शासन के अद्वितीय सारथी 82वें पट्टधर आचार्य प्रवर
श्री 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

''कर्म बंध एवं हमारा जीवन''

प्रकाशक
श्री साधुमार्गी पब्लिकेशन
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

कर्म बंध एवं हमारा जीवन

❖ lLdj.k % द्वितीय– सितम्बर 2016

❖ ifr;k % 3000

❖ eY; % 20 रूपये

❖ vFk lg;kxh % स्वधर्मी परिवार

❖ iLrd ikfIr LFkku %
Jh vf[ky Hkkjro"kh; lk/kekxh tu l?k
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर बीकानेर–334401 (राज.)
फोनः 0151–2270261–62, 2270359

❖ çdk'kd %
Jh vf[ky Hkkjro"kh; lk/kekxh tu l?k
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड़, गंगाशहर बीकानेर–334401 (राज.)
फोनः 0151–2270261–62, 2270359

विषयानुक्रमणिका (INDEX)

क्र.स.	विषय – Subject	पृष्ठ संख्या Page no.
1	कर्म बंध के मूल कारण	
2	ज्ञानावरणीय कर्म बंध के 6 कारण	
3	दर्शनावरणीय कर्म बंध के 6 कारण	
4	सातावेदनीय कर्म बंध के 10 कारण	
5	असातावेदनीय कर्म बंध के 12 कारण	
6	मोहनीय कर्म बंध के 6 कारण	
7	नैरयिकायु बंध के 4 कारण	
8	तिर्यञ्चायु बंध के 4 कारण	
9	मनुष्यायु बंध के कारण	
10	देवायु बंध के 4 कारण	
11	नामकर्म बंध के 8 कारण	
12	गोत्र कर्म बंध के 16 कारण	
13	अन्तराय कर्म बंध के 5 कारण	
14	उपसंहार	

ध्यान से पढ़ें

दोस्तों !

हम सभी चाहते हैं-

1. मेरा सुख निरन्तर बढ़ता रहे।
2. मेरी बुद्धि निर्मल व कुशाग्र हो।
3. मैं पाप कर्मों से हल्का बनूं।
4. मुझे कभी भी नरक व तिर्यञ्च योनि में जन्म न लेना पड़े।
5. मेरी भीतर की शक्ति प्रकटीभूत हो जिससे मैं सतत् पुरुषार्थ करता रहूं।
6. देव-गुरु-धर्म के प्रति मेरी श्रद्धा निरन्तर बढ़ती रहे।

मित्रों ! यह सब तभी संभव है जब हम-

1. आठ कर्म बंध के कारणों को जानेंगे।

2. हमारी दैनिक चर्या में हम कौन-कौन से अनावश्यक पाप कार्य करते हैं इसे ध्यान में रखकर सर्वप्रथम अनावश्यक पाप से बचने का सम्यक् पुरुषार्थ करेंगे।

हे भव्य आत्माओं ! हम अनावश्यक पाप कर्मों से बचने हेतु यदि सतत् जागरूक रहेंगे तो निश्चित रूप से हम हमारी आत्मा को पाप कर्मों से बहुत हल्की करके स्थायी (शाश्वत) सुख की दिशा में अपने कदमों को गतिशील कर पाएंगे।

साथियों,

हम अपनी दिनचर्या में ऐसे कौन-कौन से अनावश्यक पाप कार्य करते हैं जिनसे सहज ही बचा जा सकता है, जानने हेतु एकाग्रतापूर्वक अध्ययन प्रारम्भ करें -

'कर्म बंध एवं हमारा जीवन'

❑❑❑

निर्देश

आप जो पुस्तक पढ़ रहे हैं यदि वह पुस्तक आपकी स्वयं की है तो पढ़ते समय Highlighter या Pen / Pencil अपने हाथ में अवश्य रखें तथा पढ़ते हुए जो point आपको अपने जीवन के लिए उपयोगी लगे अर्थात् जो पाप कार्य अभी आप से हो रहे हैं परन्तु थोड़ी सी सावधानी रखने पर उनसे आप बच सकते हैं उन Points पर अवश्य Mark करें। दोस्तों ! इसका उद्देश्य यह है कि सम्पूर्ण पुस्तक पुनः पुनः पढ़ने का यदि हमें अवसर न मिले तो Mark किये हुए Points को हम सप्ताह में या 1 माह में एक बार अवश्य पढ़ लेवें, जिससे हमें लगातार प्रेरणा मिलती रहे एवं हम अपने जीवन में निरन्तर आगे बढ़ते रहें।

प्रभु वीर शासन के अद्वितीय सारथी 82वें पट्टधर आचार्य प्रवर श्री 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के वचनामृत की एक बूंद

'कर्म बंध के मूल कारण'

आधार - श्रीमद् भगवतीसूत्र शतक-7 उद्देशक-6 तथा शतक-8 उद्देशक-9

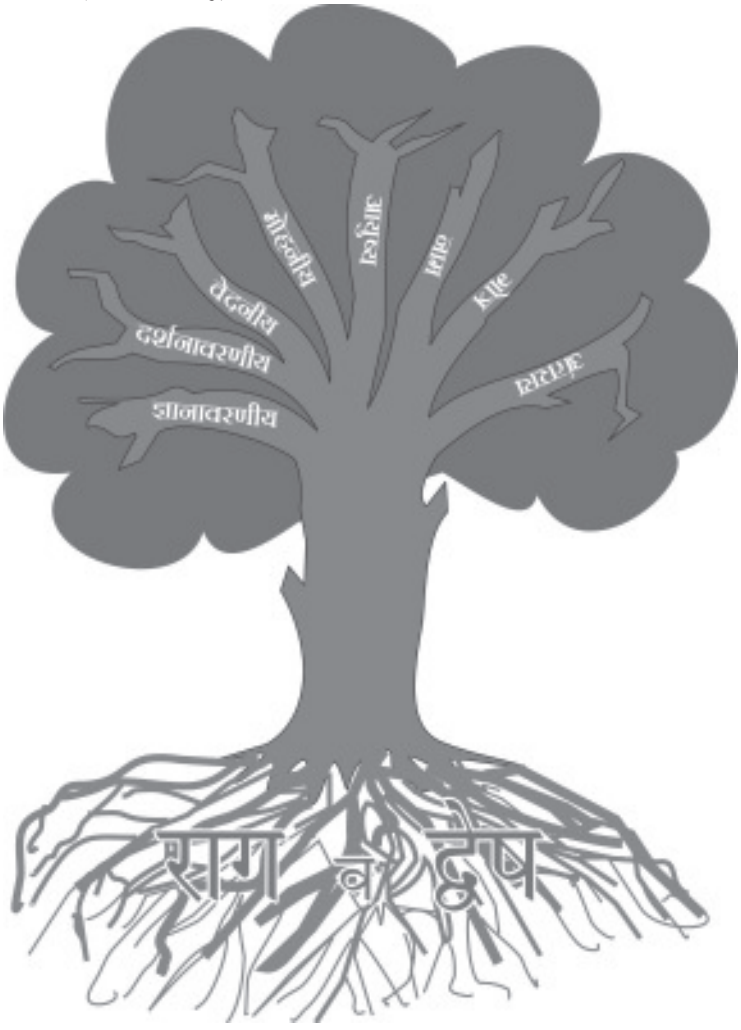

तीर्थंकर प्रभु महावीर ने संक्षेप में आठ कर्मों के बंध का मूल कारण राग व द्वेष ही फरमाया है। परन्तु सामान्य जनों को विस्तार से समझाने के लिए कृपा सिन्धु ने अष्ट कर्मों के बंध के कारण इस प्रकार फरमाये हैं-

ज्ञानावरणीय कर्म

ज्ञानावरणीय कर्म - ज्ञान + आवरणीय/आवरण = ढ़कना, छिपना। जिस कर्म के उदय से आत्मा का ज्ञान गुण ढ़क (छिप) जाता है अर्थात् ज्ञान का प्रकाश कम होता है उसे ज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं।

ज्ञानावरणीय कर्म बंध के छः कारण-

1. ज्ञान प्रत्यनीकता से
2. ज्ञान निह्नवता से
3. ज्ञान अन्तराय से
4. ज्ञान प्रद्वेष से
5. ज्ञान आशातना से
6. ज्ञान विसंवादनता से

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

1. ज्ञान प्रत्यनीकता - प्रत्यनीकता = विरोध करना। ज्ञान व ज्ञानी का विरोध करने से।
2. ज्ञान निह्नवता - निह्नवता = छिपाना, अपलाप करना। ज्ञान को छिपाना एवं ज्ञानदाता गुरु का नाम छिपाने से।
3. ज्ञान अन्तराय - अन्तराय = विघ्न उत्पन्न करना। ज्ञान में अन्तराय देने से।
4. ज्ञान प्रद्वेष - प्रद्वेष = अरूचि, ईर्ष्या। ज्ञान व ज्ञानी की आशातना करने से।
5. ज्ञान आशातना - आशातना = हीलना, अपमान, अबहुमान। ज्ञान व ज्ञानी की आशातना करने से।
6. ज्ञान विसंवादनता - विसंवाद = कुतर्क द्वारा ज्ञान व ज्ञानी के कथन को गलत सिद्ध करने का प्रयास करना। ज्ञान व ज्ञानी से विसंवाद करने से।

प्रत्यनीकता = विरोध करना

(I) **ज्ञान प्रत्यनीकता से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। यथा-**

1. ज्ञान सीखने से कोई फायदा नहीं है, ज्ञान सीखने से कोई पेट थोड़े ही भरेगा, ज्ञान सीखने में समय खराब करने के बजाय तो मेहनत करके पैसा कमाना चाहिए जिससे सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी।
2. ज्ञान को बेकार या गौण समझकर ज्ञान का विरोध करते हुए कुछ भोग विलासी युवा ऐसा कहते हैं- ''अरे! यह जवानी, किताबी कीड़ा बनकर खराब करने के लिये नहीं है यह तो मौज-शौक व ऐशो-आराम करने के लिए है।''
3. कुछ लोग ज्ञानी पुरुषों का विरोध करते हुए कहते हैं-''अरे! उनका ज्ञान इतना ठोस नहीं है केवल ऊपर-ऊपर का ज्ञान है'' आदि।
4. शास्त्र सम्मत सही सिद्धान्त (Principle) का भी सिर्फ इसलिए विरोध करना कि हम इस नियम का पालन नहीं करते हैं।
5. कुछ लोग किसी ज्ञानी व्यक्ति के निन्दनीय आचरण को देखकर मन में ज्ञान के प्रति विरोध की भावना बिठा लेते हैं कि ज्ञान सीखना बेकार है आचरण अच्छा होना चाहिये, परन्तु वे व्यक्ति इस बात की ओर ध्यान नहीं देते कि बिना ज्ञान के आचरण अच्छा कैसे हो सकता है?
6. कॉलेजों में अध्यापकों के Against / विरुद्ध Rally / मोर्चा निकालकर उनका विरोध करना।
7. अध्यापक के द्वारा दूसरे अध्यापकों को गलत साबित करने के लिए उनका विरोध करना।
8. ज्ञान की बातों का विरोध करना, जैसे- केवलज्ञान, मन:पर्यवज्ञान आदि सब बेकार की बातें है।

   केवलज्ञान = सम्पूर्ण ज्ञान।

   मन:पर्यवज्ञान = जिस ज्ञान के द्वारा दूसरे के मन के भावों को अच्छे से जाना जा सकता है।

   (इस ज्ञान से सिर्फ संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवों के मन के भावों को ही जाना जाता है और यह ज्ञान सिर्फ साधु को ही होता है।)
9. कोई छोटा व्यक्ति हमें कोई सही बात बता रहा है लेकिन अपना अपमान समझकर उस बात को सही जानते हुए भी स्वीकार नहीं करना, उसका विरोध करना।

निह्नवता = छिपाना, अपलाप करना। (Hide)

(II) **ज्ञान निह्नवता से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। यथा-**

1. दो छात्रों ने मिल-जुलकर Home-Work किया, उसमें से एक छात्र यदि कुछ कठिन प्रश्नों के उत्तर दूसरे से छिपा ले एवं मन में सोचे कि कक्षा में केवल मैं ही उत्तर दूंगा तो मुझे शाबाशी मिलेगी।
2. किसी को कुछ देते समय कुछ अंश में या मुख्य बात छिपा लेना व बाकि बात बता देना। जैसे- किसी महिला को खाने की Recipe बताते समय मुख्य Tip को छिपा लेना ताकि वह बहुत अच्छा न बना सके।
3. कुछ छात्र जिस अध्यापक के पास Tuition पढ़ने जाते हैं उस अध्यापक का नाम अन्य विद्यार्थियों के द्वारा पूछे जाने पर इस डर से नहीं बताते हैं कि कहीं वह विद्यार्थी उस अध्यापक से पढ़कर कक्षा में मेरे से आगे न निकल जाये।
4. अपने से वय (Age) में या पदवी में छोटे व्यक्ति से ज्ञान हासिल करने पर बहुत लोग ज्ञानदाता को गुरु मानते ही नहीं तथा किसी के द्वारा पूछे जाने पर भी उनका नाम छिपाते हैं। यथा- पड़ोसी से या बहु से कोई चीज सीखी है तो अवसर आने पर उसका नाम छिपाना।
5. शिक्षक किसी को पढ़ाते समय यदि इस प्रकार सोचे कि यदि मैं सारे मुख्य बिन्दु (Important Point) विद्यार्थी को बता दूंगा तो मेरी कोई विशेषता (Importance) नहीं रहेगी। इस प्रकार सोचकर कुछ मुख्य Points को विद्यार्थी से छिपाना।
6. कुछ लोग अपने ज्ञान को इसलिए छिपाते हैं कि यदि मैं कह दूंगा 'मुझे आता है', तो यह काम मेरे जिम्मे आ जायेगा इसलिए पहले ही मना कर देते हैं कि मुझे यह नहीं आता है।
7. अन्य किसी के द्वारा लिखे हुए लेख, भजन, ग्रंथ आदि को अपने नाम से छपवाना।
8. जिसके द्वारा भजन बनाया गया है उसकी बिना अनुमति के भजन में तोड़, मरोड़ करना। यथा-दूसरे संघ के नाम से बने हुए भजन में दूसरे संघ का नाम हटाकर अपने संघ का नाम जोड़ना या भजन में जहाँ भजन निर्माता का नाम आता है उस नाम को न बोलकर वहाँ दूसरा नाम जोड़ना या उस लाइन की जगह नई लाइन जोड़ देना आदि।

   NOTE - किसी भी भजन की राग के आधार पर नया भजन बनाया जा सकता है इसमें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सिर्फ कुछ शब्दों की हेराफेरी करके ज्यों का ज्यों भजन बोलना उचित नहीं है।
9. ज्ञान- ध्यान सीखने की या याद करने की या दूसरों को पढ़ाने की कोई सरल पद्धति आती हो तो उसे दूसरों से छुपाना।

अन्तराय = विघ्न उत्पन्न करना

(III) ज्ञान में अन्तराय देने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनका पुत्र यदि ज्ञान प्राप्त करे तो उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं किन्तु उसी स्थान पर पुत्री या पुत्रवधु पढ़ रहें हैं तो पढ़ाई के बीच-बीच में घर का काम बता कर उनके ज्ञान प्राप्ति में अन्तराय पैदा करते हैं। ऐसे व्यक्ति मानते हैं कि पढ़ लिख कर यह क्या करेगी? करना तो घर का काम ही है, तो पढ़ने में समय क्यों बर्बाद करे।
2. अधिक स्वाध्याय, ज्ञान अर्जित करने वाले व्यक्ति के बंधुजन (Colleague Peers), पारिवारिक जन, इस भय से, कि कहीं वैराग्य न आ जाए, ज्ञान में अन्तराय डालने की कोशिश करते हैं ताकि उस व्यक्ति का मन सांसारिक कार्यों में लगे।
3. यदि एक बच्चा पढ़ रहा हो और उसी स्थान पर दूसरा आकर टीवी देखने बैठ जाए या जोर-जोर से गाना गाने लगे ताकि वो बच्चा पढ़ नहीं पाये।
4. कोई व्यक्ति स्थानक में बैठ कर ज्ञान सीख रहा है या गाथा आदि याद कर रहा है उस समय अन्य कोई व्यक्ति वहाँ आकर भक्तामर, भजन आदि जोर-जोर से गाने लगे।
5. साधु-साध्वी यदि स्वाध्याय आदि कर रहे हैं तो बीच में मांगलिक सुनाने के लिए निवेदन करे।
6. किसी की पुस्तक, Note Book आदि छिपा देना, जिससे वह पढ़ नहीं सके।
7. स्वयं अध्ययन करना परन्तु साथी विद्यार्थी को अध्ययन के समय खेलने, घूमने, थियेटर आदि के लिए आग्रह करना जिससे साथी विद्यार्थी अध्ययन न कर पाये और वह पीछे रह जाये।
8. संत महापुरुषों के समीप बैठकर अमहत्वपूर्ण व अनावश्यक चर्चा करना। यथा-

I. 4 विकथा (स्त्रीकथा, भत्तकथा, देशकथा, राजकथा) करना।

(A) म.सा आज तो अमुक खिलाड़ी ने क्या मैच खेला?

(B) अभी अमुक नई Picture आई है आदि।

(C) आजकल Ladies के क्या-क्या फैशन आये है।

II. घर व्यापार संबंधी चर्चा करना-

(A) अभी आर्थिक स्थिति (Financial Position) जितनी चाहिए उतनी अच्छी नहीं है।

(B) खुद का घर खरीदने की बहुत इच्छा है पर पैसे का जुगाड़ नहीं हो पा रहा है।

(C) लड़का 30 साल का हो गया है पर कहीं संबंध बैठ नहीं पा रहा है।

(D) धन्धे में घाटा लग गया। अब कैसे बिजनेस आगे बढ़ायें? समझ नहीं आ रहा है।

(E) अमुक व्यक्ति से Partnership में काम करने की सोच रहा हूं, अच्छा रहेगा या कैसे, क्या?

III. स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा करना–

(A) पापा की तबीयत ठीक नहीं है। मुम्बई, हैदराबाद में बड़े-बड़े डॉ. को दिखा दिया, पर कुछ उपचार समझ ही नहीं आ रहा है।

(B) मेरा भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, कुछ भी खाओ गैस बन जाती है, पायल्स की Problem भी है।

(C) Mrs. को भी घुटने की तकलीफ है, कभी-कभी BP भी बढ़ जाती है आदि।

(D). म.सा आपके पास कोई मंत्र हो तो बता दो। Mrs. की तबीयत ठीक नहीं होने से वह बहुत बार Depression में आ जाती है आदि। आपके द्वारा बताए हुए मंत्र से शायद उसकी तबीयत ठीक हो जाये और वह घर की पूरी जिम्मेदारी सही तरीके से संभाल ले।

9. अपने कारण दूसरों की ज्ञान चर्चा को Postpone करना। यथा– अमुक तारीख को मैं नहीं आ पाऊंगी इसलिए 2 दिन बाद क्लास रखें इस प्रकार कहना।

प्रद्वेष = अरूचि, ईर्ष्या

(IV) **ज्ञान प्रद्वेष से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। यथा-**

1. ज्ञान को बोरिंग समझना। ज्ञान कक्षा, प्रवचन आदि में जान-बूझकर समय पर न जाना।
2. ज्ञानार्जन के लिए सम्यक् पुरुषार्थ नहीं करना तथा नहीं पढ़ने के बहाने (Excuse) ढूंढना। यथा-मुझे याद नहीं होता, मेरे पास समय नहीं है आदि।
3. अल्प समय में अधिक ज्ञानार्जन करने वाले व्यक्ति से ईर्ष्या (Jealousy / Envy) करना।
4. किसी एक ज्ञानी साधु के पास बहुत से लोग आकर ज्ञानार्जन करते हैं, तो कभी-कभी अन्य साधु जिसके पास अधिक लोग आकर नहीं बैठते तो वह साधु उस साधु से द्वेष करने लग जाता है।
5. बहुत बार ऐसा भी होता है कि जब किसी विषय को याद करने के लिए या समझने के लिए बहुत पुरुषार्थ (Effort) करते हैं परन्तु फिर भी याद नहीं होता तब मन में उस विषय से अरूचि हो जाती है।
6. दूसरे सम्प्रदाय* की संशोधित (Rectified) एवं सुविवेचित (Thoroughly Explained and Published) पुस्तकों को देखकर मन में ईर्ष्या के भाव लाना।
7. कोई भी मेरे से आगे नहीं बढ़े ऐसी चाह रखना तथा दूसरे विद्यार्थी को Exam में कम Marks मिलने पर खुश होना।
8. समान योग्यता वाले विद्यार्थी को भेद-भाव पूर्वक पढ़ाना।
9. दिन-रात मेहनत करके कोई Degree प्राप्त करने के पश्चात् योग्यता (Qualification) के अनुरूप नौकरी या मान-सम्मान न मिलने पर ज्ञान के प्रति अरूचि हो जाना।

---

* सम्प्रदाय: एक ही धर्मगुरु/आचार्य के नेतृत्व में आस्था रखनें वाले लोगों के समूह को सम्प्रदाय कहते हैं। यह सम्प्रदाय का रूढ़ि (प्रचलित) अर्थ है।

आशातना = हीलना, अपमान, अबहुमान

(V) **ज्ञान आशातना से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। यथा-**

1. किसी के द्वारा कुछ गलत किये जाने पर मूर्ख, बेवकूफ (Idiot, Foolish, Nonsense, Stupid etc.) आदि शब्दों का प्रयोग करना।
2. गुरु के द्वारा किसी विषय या ग्रंथ को पढ़ने के लिए मना किये जाने पर भी उसे पढ़ना।
3. किसी के द्वारा कुछ समझाने पर इस प्रकार कहना कि बड़ा आया समझदार! मुझे समझाने लगा है .... आदि।
4. ज्ञानी संत महापुरुष या ज्ञानी श्रावक अपने समीप आने पर उनके अभिवादन (Respect) आदि के लिए खड़ा न होना या उनका यथोचित मान-सम्मान न करना।
5. गुरु का मजाक उड़ाना। जैसे- गुरु पर Joke बोलना, गुरु की नकल निकालना (Mimicry) गुरु पर कागज का Aeroplane, Chalk आदि फैंकना।
6. किसी के समीप कुछ ज्ञान सीखने के पश्चात् इस प्रकार कहना कि- 'अरे ! यह तो मुझे मालूम ही था, इसमें कौनसी बड़ी बात है?' आदि।
7. पढ़ाते समय यदि सामने वाले व्यक्ति को अच्छे से समझ में नहीं आए तो उस पर झुंझलाना (Irritate) या उसे डांटना, फटकारना।
8. जो ज्ञान के अयोग्य (अपात्र) है उसे ज्ञान सिखाना तथा जो योग्य है उसे ज्ञान नहीं सिखाना।
9. अध्यापक/गुरु को पलटकर जवाब देना या उनकी बेइज्जती (Insult) करना।

विसंवाद = कुतर्क द्वारा ज्ञान व ज्ञानी के कथन को गलत सिद्ध करने का प्रयास करना

(VI) ज्ञान विसंवादनता से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. भौतिक विज्ञान को ही सही मानकर, उनकी मिथ्या धारणा को पकड़कर उसे सही सिद्ध (Prove) करने के लिए बहस (Argument) करना।
2. खुद के सम्प्रदाय की गलत मान्यता मालूम होते हुए भी सामने वाले व्यक्ति से कुतर्क करना।
3. किसी को पढ़ाते हुए, भाषण देते हुए या ज्ञान-चर्चा आदि करते हुए अपने मुंह से कभी कोई गलत या असंगत बात निकल जाये तो भी विपरीत प्रमाणों, कुतर्कों के द्वारा अपनी बात को सही सिद्ध करने का प्रयास करना।

आओ! इसे संवाद से जानें-

संवाद-I : गुरुजी का विद्यार्थी के साथ विसंवाद-

गुरुजी- राहुल! माता ने तुम्हें जन्म दिया है, माता का तुम पर बहुत उपकार है अतः माता की सेवा करनी चाहिये।

राहुल- गुरुजी! जन्म दिया इसमें माता का क्या उपकार है? जब तक मैं नहीं था तब माता बांझ (Infertile) कहलाती थी, लोग माता का मुंह देखना भी अपशकुन (Bad Omen) मानते थे, मेरे कारण तो माता का यह बांझ का कलंक मिटा है। अतः इसमें माता का मुझ पर क्या उपकार है? यह तो मेरा माता पर उपकार है।

गुरुजी- राहुल! माता ने बाल्यावस्था में तुम्हारा पालन-पोषण किया है। तुम्हें नहलाया-धुलाया, खिलाया-पिलाया आदि।

राहुल- गुरुजी! माता ने तो मेरे शरीर को खिलौना बनाया, मनोरंजन किया, लाड़-प्यार करके आनंद उठाया, मेरे कारण ही वह खुश रहती, इसमें मेरा ही माता पर उपकार हुआ ना! माता का मेरे ऊपर क्या उपकार है?

गुरुजी- राहुल! माँ ने तुम्हें अपना दूध पिलाया है।

राहुल- गुरुजी! यदि मैं माँ का दूध नहीं पीता तो माँ के स्तन फटने लगते, माँ बीमार हो जाती? यह तो मेरा उपकार है कि माँ को बीमार होने से बचा लिया। इसमें उनका क्या उपकार?

गुरुजी- माँ ने तुम्हें 9 महीने तक पेट में रखा, उसने कितनी तकलीफ सहन की है?

राहुल– वह तो माँ ने अपनी स्वार्थ–पूर्ति के लिए, स्वयं की खुशी के लिए किया है, फिर भी यदि उपकार है तो मैं 9 महीने पेट में रखने का किराया चुका देता हूँ।

गुरुजी– राहुल! तूं किराया चुकाना चाहता है! तो ऐसा कर तेरे शरीर में माँ के तीन अंग हैं (मांस, रक्त, मस्तक) उन्हें वापस कर दे।

राहुल अब विसंवाद को छोड़कर सच्चाई को स्वीकार करते हुए गुरुजी से इस प्रकार कहता है–

राहुल–गुरुजी! मुझे यह मालूम था कि माता–पिता का मुझ पर परम उपकार है, परन्तु मैं सिर्फ अपनी तार्किक शक्ति से आपको जीतना चाहता था और अपने कर्तव्य से पीछे हटना चाहता था। लेकिन वस्तुतः अब मेरे पास कोई उत्तर नहीं है, आप मुझे अपराध के लिए क्षमा करें। अब मैं अपनी माता की जी–जान से सेवा करूंगा, यह मेरा वादा है।

संवाद–II : माता के साथ पुत्र का विसंवाद–

माता – पुत्र, मन लगा कर पढ़ाई करो।

पुत्र – पढ़ने से क्या होगा?

माता – ज्ञान बढ़ेगा।

पुत्र – उससे क्या होगा?

माता – तुम अच्छा व्यवसाय कर सकोगे या ऊंची नौकरी पा सकोगे।

पुत्र – उससे क्या होगा?

माता – तुम्हारे पास धन होगा, प्रतिष्ठा होगी, योग्य जीवन संगिनी मिलेगी।

पुत्र – उससे क्या होगा?

माता – तुम्हारा जीवन आराम से बीतेगा।

पुत्र – इतना सब, जीवन में आराम के लिए? आराम तो मैं अब भी कर ही रहा हूं। इसके लिए पढ़ाई की क्या जरूरत है?

वास्तव में – बालक को पढ़ना नहीं है इसलिए कुतर्क द्वारा माता को समझा रहा है।

संवाद-III : मित्र का मित्र के साथ विसंवाद-

अनिल - यार सुनील! Mexican Cheese / Britannia Cake खाने की बहुत इच्छा हो रही है।

सुनील - भाई, हम जैन हैं और इसमें Non Veg रहता है अत: हमें ऐसी चीजें नहीं खाना चाहिए।

अनिल - देख भाई! जब तक मैं नहीं खाऊंगा, मेरा मन बैचेन रहेगा और धर्म यह कहता है कि सबसे पहले अपने मन को शांत रखो अत: इसे खाकर मन को शांत करना अच्छा ही है।

सुनील - मन को शांत रखने का मतलब यह नहीं है कि अच्छा/बुरा जो भी विचार मन में आये उसे पूरा करके मन को शांत रखो! मन को शांत रखने का मतलब यह है कि अपनी इच्छाओं को वश में करो, उससे मन अपने आप शांत हो जायेगा।

अनिल - तुम्हारा कहना गलत है। जब तक व्यक्ति अपनी इच्छा की पूर्ति नहीं कर लेगा तब तक उसका मन शांत नहीं हो सकता। अत: इच्छाओं को पूर्ण करके ही मन को शांत रखना चाहिए।

सुनील - थोड़ी देर चुप रहा, फिर अचानक अनिल को एक जोरदार थप्पड़ मारी।

अनिल - (गुस्से में) अरे! तुने मुझे थप्पड़ क्यों मारी?

सुनील - भाई! मेरी बहुत इच्छा हो रही थी कि मै तुम्हें थप्पड़ मारूं, इसलिए मार दी। क्योंकि अभी तुमने ही कहा था कि जो इच्छा हो उसकी पूर्ति करने से ही मन शांत हो सकता है।

अनिल को बात समझ में आ गई कि इच्छा की पूर्ति करके मन को शांत करने का तरीका गलत है तथा इससे मन शांत नहीं होता अपितु मन और अधिक अशांत हो जाता है।

जिज्ञासा-ज्ञान प्रत्यनीकता व ज्ञान विसंवादनता में क्या अंतर है?

समाधान- ज्ञान प्रत्यनीकता में सिर्फ ज्ञान व ज्ञानी का विरोध किया जाता है परन्तु इसमें तर्क व सिद्धान्त का सहारा लेकर ज्ञान व ज्ञानी को गलत सिद्ध करने का प्रयास नहीं किया जाता है।

ज्ञान विसंवादनता में कुतर्क या गलत प्रमाण द्वारा ज्ञान व ज्ञानी को गलत सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है।

दर्शनावरणीय कर्म

दर्शनावरणीय कर्म- दर्शन+आवरणीय/आवरण = ढकना, छिपना। जिस कर्म के उदय से आत्मा का दर्शन गुण ढ़क (छिप) जाता है उसे दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं।

दर्शनावरणीय कर्म बंध के छः कारण-

1. दर्शन प्रत्यनीकता से
2. दर्शन निह्नवता से
3. दर्शन अन्तराय से
4. दर्शन प्रद्वेष से
5. दर्शन आशातना से
6. दर्शन विसंवादनता से

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

1. दर्शन प्रत्यनीकता - दर्शन व दर्शनवान का विरोध करने से।
2. दर्शन निह्नवता - दर्शन व दर्शनवान का नाम छिपाने से।
3. दर्शन अन्तराय - दर्शन में अन्तराय देने से।
4. दर्शन प्रद्वेष - दर्शन व दर्शनवान से द्वेष करने से।
5. दर्शन आशातना - दर्शन व दर्शनवान की आशातना करने से।
6. दर्शन विसंवादनता - दर्शन व दर्शनवान से विसंवाद करने से।

वस्तु के सामान्य धर्म को जानना दर्शन है तथा वस्तु के विशेष धर्म को जानना ज्ञान है। ज्ञान व दर्शन का परस्पर गहरा संबंध है अतः जिन क्रियाओं से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है उन्हीं क्रियाओं से दर्शनावरणीय कर्म का बंध अवश्य होता है अतः दर्शनावरणीय कर्म बंध के छहों कारणों का विस्तृत वर्णन ज्ञानावरणीय कर्म के समान ही समझना चाहिए।

सामान्य धर्म को जानना = सत्ता मात्र/ अस्तित्व बोध।

नोट- इसके उदाहरण ज्ञानावरणीय कर्म के अनुसार ही है।

वेदनीय कर्म

वेदनीय कर्म- जिस कर्म के उदय से जीव को पाँच इन्द्रियों एवं मन से सम्बन्धित सुख/दु:ख की प्राप्ति होती है उसे वेदनीय कर्म कहते हैं।

वेदनीय कर्म बंध के 22 कारण-

साता वेदनीय कर्म बंध के 10 कारण + असाता वेदनीय कर्म बंध के 12 कारण = 22

जिस कर्म के उदय से जीव को पांच इन्द्रियों एवं मन से सम्बन्धित सुख (साता) की प्राप्ति होती है उसे साता वेदनीय कर्म कहते हैं।

सातावेदनीय कर्म बंध के 10 कारण-

1. प्राण अनुकम्पा से
2. भूत अनुकम्पा से
3. जीव अनुकम्पा से
4. सत्व अनुकम्पा से
5. बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्वों को दु:ख न पहुंचाने से
6. बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्वों को शोक नहीं कराने से
7. बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्वों को नहीं झूराने से
8. बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्वों को शोक पूर्वक नहीं रुलाने से
9. बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्वों को नहीं मारने पीटने से
10. बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्वों को परिताप नहीं देने से

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

1. प्राण - बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चउरिन्द्रिय।
2. भूत - वनस्पति।
3. जीव - पंचेन्द्रिय।
4. सत्व - पृथ्वीकाय (मिट्टी, नमक आदि), अप्काय (पानी), तेउकाय (अग्नि), वायुकाय (हवा)।

   अनुकम्पा = दया, रहम (Mercy)।
5. दु:ख नहीं देने से - दूसरों को शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार का दु:ख नहीं देने से।
6. शोक नहीं कराने से - दीन भाव नहीं लाना, उत्साह हीन नहीं करना, उदासीन नहीं करना, वियोग जन्य दु:ख नहीं देना।
7. नहीं झूराने से-ऐसा शोक नहीं कराना जिससे चिन्ता के मारे व्यक्ति का शरीर सूख जाये, क्षीण हो जावे।
8. शोक पूर्वक नहीं रुलाने से - ऐसा शोक नहीं कराना जिससे व्यक्ति की आंखों से आंसू आ जाये या मुंह से लार गिरने लग जाये।
9. नहीं मारने-पीटने से - लकड़ी आदि से नहीं मारना-पीटना।
10. परिताप नहीं देने से - शारीरिक रूप से परेशान नहीं करना, दु:ख नहीं देना, सताना नहीं या तंग नहीं करना।

पृथ्वीकाय - पृथ्वी ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें पृथ्वीकाय कहते हैं।
अप्काय - पानी ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें अप्काय कहते हैं।
तेउकाय - अग्नि ही जिन जीवों का शरीर हैं उन्हें तेउकाय कहते हैं।
वायुकाय - वायु ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें वायुकाय कहते हैं।
वनस्पतिकाय - वनस्पति ही जिन जीवों का शरीर है उन्हें वनस्पतिकाय कहते हैं।

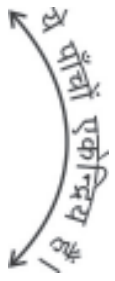

पाँच इन्द्रिय - (Five Senses)

I श्रोत्रेन्द्रिय - Sense of Sound

II चक्षुरिन्द्रिय - Sense of Vision

III घ्राणेन्द्रिय - Sense of Smell

IV रसनेन्द्रिय - Sense of Taste

V स्पर्शेन्द्रिय - Sense of Touch

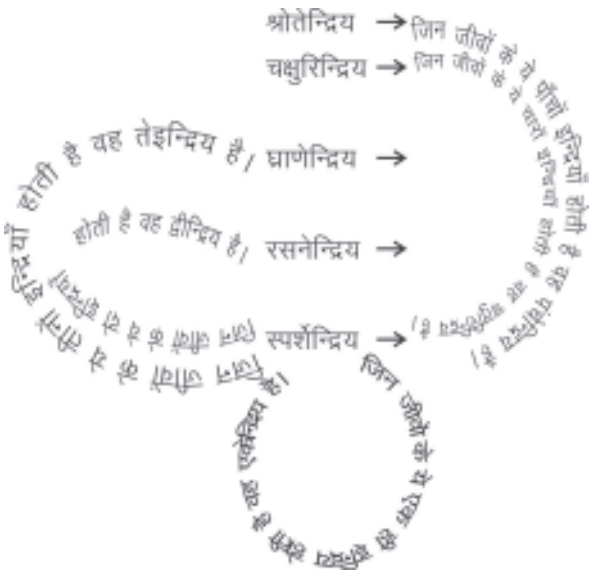

असातावेदनीय– जिस कर्म के उदय से जीव को पाँच इन्द्रियों एवं मन से सम्बन्धित दु:ख (असाता) की प्राप्ति होती है उसे असातावेदनीय कर्म कहते हैं।

असातावेदनीय कर्म बंध के 12 कारण

1. दूसरों को दु:ख देने से
2. दूसरों को शोक कराने से
3. दूसरों को झूराने से
4. दूसरों को शोक पूर्वक रुलाने से
5. दूसरों को मारने पीटने से
6. दूसरों को परिताप देने से
7. बहुत प्राण, भूत, जीव और सत्वों को दु:ख पहुंचाने से
8. बहुत प्राण, भूत, जीव और सत्वों को शोक कराने से
9. बहुत प्राण, भूत, जीव और सत्वों को झूराने से
10. बहुत प्राण, भूत, जीव और सत्वों को शोकपूर्वक रुलाने से
11. बहुत प्राण, भूत, जीव और सत्वों को मारने पीटने से
12. बहुत प्राण, भूत, जीव और सत्वों को परिताप देने से

दु:ख देने से = दूसरों को शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार का दु:ख देने से।

शोक कराने से = दीन भाव में लाना, उत्साह हीन करना, उदासीन करना, वियोग जन्य दु:ख देना।

झूराने से = ऐसा शोक जिससे चिन्ता के मारे व्यक्ति का शरीर सूख जाये, क्षीण हो जाये।

शोकपूर्वक रुलाने से = ऐसा शोक कराना जिससे व्यक्ति की आंखों से आंसू आ जाये या मुँह से लार गिरने लगे।

परिताप देने से = शारीरिक रूप से अत्यधिक परेशान करना, बहुत दु:ख देना, सताना या तंग करना।

नोट– प्रारंभ के 1 से 6 बिन्दु (Points) एक जीव की अपेक्षा एवं अंतिम 6 बिन्दु अर्थात्

7 से 12 बिन्दु बहुत जीवों की अपेक्षा है। विवेचन के दौरान एक जीव व बहुत जीवों का पृथक्–2 वर्णन न करके समुच्चय रूप से वर्णन किया गया है।

Note *- सातावेदनीय कर्म बंध के 5 से 10 तक के Points और असातावेदनीय कर्म बंध के 7 से 12 तक के Points Just विपरीत है अतः दोनों का विस्तृत वर्णन न करके सिर्फ असातावेदनीय कर्म बंध के 7 से 12 तक के Points का विस्तृत वर्णन आगे किया जायेगा।*

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

प्राण - बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

प्राण अनुकम्पा करने से साता वेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. मक्खी, मच्छर आदि प्राणी गरम दूध में, तेल की कड़ाही आदि में गिरकर मर न जाये अत: अनुकम्पा बुद्धि से बर्तनादि यतना-पूर्वक ढ़ककर रखना।
2. पानी के साथ लट आदि त्रस जीव भी मुँह में न जाये अत: उनकी अनुकम्पा बुद्धि से पानी छानकर पीना।
3. रात्रि में खाना खाने से छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े आदि भी भोजन के साथ मुँह में जा सकते हैं अत: उन पर अनुकम्पा भाव रखते हुए रात्रि भोजन का त्याग करना।
4. घर में मच्छर, कॉकरोच, चींटी आदि जीवों की उत्पति न हो इस हेतु पहले से सावधानी बरतना जिससे Good Night, Pest Control, लक्ष्मण रेखा आदि दवाई की आवश्यकता ही नहीं पड़े, इस प्रकार विवेक रखना, फिर भी कदाचित् जीवोत्पत्ति हो भी जाय तो भी जीवों को मारने के लिए दवाई नहीं छिड़कना।
5. खजूर, काजू, तालमखाना आदि पदार्थों में एक कालावधि (Time Period) के पश्चात् जीवोत्पत्ति (लट, कीड़े) की संभावना रहती है अत: जीवोत्पत्ति न हो इस हेतु पूर्व से ही सजग रहना तथा इन खाद्य पदार्थों का उपयोग करते समय भी यतना रखना (देखकर खाना)।
6. प्रात: Gas, चूल्हा अच्छे से साफ करना ताकि कहीं Gas चूल्हा चालू करते ही उसके छिद्रों में कोई छोटे जीव हो तो वे मर न जाए, यदि जीव हो तो उन्हें यतनापूर्वक सुरक्षित स्थान पर छोड़ना।
7. अनाज का बहुत ज्यादा Storage करने से भी कीड़े पड़ जाते हैं अत: प्राण अनुकम्पा भाव से आवश्यकता से बहुत अधिक सामग्री इकट्ठी करके नहीं रखना।
8. बालों में जूँ मारने की दवा (शेम्पू आदि) नहीं डालना।
9. भोजन में कभी भी झूठा नहीं छोड़ना तथा ठेले आदि में या विवाह आदि कार्यक्रम में नाश्ता/भोजन करके या चाय/ज्यूस आदि पीकर प्लेट-गिलास आदि इधर-उधर न फेंकना, क्योंकि मीठास या भोजन की गंध से उसमें बहुत चींटियां या छोटे-छोटे जीव आ जाते हैं, वे जीव लोगों के पांवों के नीचे दबकर या सफाई आदि के दौरान मर जाते हैं।

सामूहिक कार्यक्रम में या घर में कदाचित् भोजन बच जाये या झूठन आदि हो तो उसे नाली या रास्ते में न डालकर इकट्ठा करके पशुओं को खिला देने से उसमें जीव उत्पन्न भी नहीं होंगे और पशुओं का पेट भी भरेगा। कई बार लोग बचा हुआ खाने-पीने का सामान प्लास्टिक थैली में भरके फैंक देते हैं, जिसे कभी-कभी गायें आदि थैली सहित खा लेती है जो उसकी मृत्यु का कारण बन जाती है। अत: श्रावक को पूर्ण विवेक सहित आचरण करना चाहिए।

भूत = वनस्पति

भूत अनुकम्पा करने से साता वेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. सचित्त (Alive) वस्तु का त्याग करना, हरी सब्जी, फल आदि की मर्यादा करना, अनन्तकायिक वनस्पति (Infinite Souls In One Body) को अभयदान देने के भाव से जमीकंद का त्याग करना।
2. शादी या अन्य कार्यक्रर्मों में फूलों का अनावश्यक आरंभ न करना।

   A. फूलों का डेकोरेशन नहीं करवाना।

   B. सचित्त फूलों की सजावट आदि नहीं करवाना।

   C. बगीचे (Lawn) में कोई भी कार्यक्रम करने से बचना।
3. मुख्य रूप से बरसात के मौसम में खाद्य पदार्थों में फूलन न आये इस हेतु पहले से विवेक रखना। आगरे का पेठा, अचार, मुरब्बा आदि लम्बे समय तक सार-संभाल न करने पर उनमें फूलन आने की संभावना रहती है। भूत अनुकम्पा बुद्धि से इन वस्तुओं की सार-संभाल करना।
4. स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से बगीचे में सैर के लिए जाने पर भी भूत अनुकम्पा भाव रखना। हरी घास पर नहीं चलना। अनावश्यक फल-फूलादि नहीं तोड़ना।
5. बरसात के मौसम में बहुत सी इमारतों में, घरों के सामने काई (Algae) जम जाती है, ऐसी अवस्था में दिन में जितनी बार भी घर से बाहर आने-जाने का काम पड़ेगा उतनी बार अनन्त जीवों की विराधना होगी। इस विराधना से बचने हेतु अनेक विवेकवान श्रावक बरसात चालू होने से पूर्व ही इमारत या घर से लेकर बाहर रोड तक एक पट्टी में White Paint करा देते हैं जिससे वह स्वयं पूरे परिवार सहित बार-2 गमनागमन से होने वाले अनन्तानन्त जीवों की विराधना से बच जाते हैं तथा अन्य अनेक लोग भी उसके निमित्त से जीव हिंसा से बचते हैं, भूत अनुकम्पा भाव से इस प्रकार विवेक रखना।
6. श्रावक जीवन-निर्वाह हेतु घर में सचित्त व अचित्त दोनों प्रकार की वनस्पति का संग्रह करने पर भी विवेकवान श्रावक भूत अनुकम्पा भाव से इस बात का विवेक रखता है कि मैं सचित्त व अचित्त दोनों प्रकार की वनस्पति को एक साथ न रखूं क्योंकि यदि एक ही साथ दोनों प्रकार की वस्तुएं रहेगी तो जब मुझे अचित्त वस्तु की आवश्यकता होगी तब सचित्त की आवश्यकता न होने पर भी अचित्त वस्तु को ग्रहण करते हुए सचित्त वस्तु की अनावश्यक रूप से विराधना होगी। यथा- घर की आवश्यकता के लिए श्रावक काजू, किशमिश, बादाम, लौंग, इलायची, कालीमिर्च, मिश्री आदि वस्तुएँ लेकर आया, इसमें

काजू, लौंग व मिश्री अचित्त है शेष सभी सचित्त है। अब यदि सभी वस्तुओं को एक ही स्थान पर रख दिया (अर्थात् अलमारी में एक ही साथ रख दिया अथवा फिक्स अलमारी में एक ही खण्ड (Rack) में नीचे कागज बिछाकर सबको उसके ऊपर रख दिया) तो जब उसे सिर्फ काजू की आवश्यकता होगी तब काजू को उठाने की प्रक्रिया में अनावश्यक रूप से किशमिश, बादाम आदि सचित्त वनस्पति की विराधना (हिंसा) का भागी बनता है।

जो श्रावक भूत अनुकम्पा भाव से सचित्त व अचित्त वस्तुओं को पृथक-पृथक रखने का विवेक रखता है वह साता वेदनीय कर्म के बंध के साथ-साथ यथावसर सुपात्रदान का लाभ भी प्राप्त कर सकता है।

7. कई लोगों की आदत होती है, सब्जी साफ कर ली फिर जो छिलके, बीज आदि पड़े रहते हैं, उससे (चाकू से या हाथों से) खेलते रहते हैं, भूत अनुकम्पा भाव से इस प्रकार नहीं करना।

8. फल-सब्जी आदि लाने के लिए Market में जाने पर जो सब्जी आदि खरीदनी नहीं है फिर भी उन्हें हाथ में लेकर देखने से अनावश्यक रूप से वनस्पति के जीवों की विराधना होती है अतः भूत अनुकम्पा भाव से इस प्रकार नहीं करना तथा बहुत अधिक हरी वनस्पति लाकर उन्हें फ्रिज में नहीं रखना, क्योंकि जितने दिन वो फ्रिज में रहती है उतने समय तक उन्हें पीड़ा पहुंचती रहती है।

9. जिस वनस्पति को छीलकर नमक आदि लगाकर रखना पड़ता है (बनाने से पहले) ऐसी वनस्पति को या तो नहीं बनाना चाहिए या बनाने का तरीका बदल देना चाहिए। जैसे- करेला आदि।

जीव = पंचेन्द्रिय (Living Beings Having Five Senses)

जीव अनुकम्पा करने से साता वेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. माता-पिता, रोगी, वृद्ध आदि की सेवा करने के साथ-2 अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम आदि स्थानों पर भी यथासंभव सेवा कार्य करना।
2. बिल्ली, चूहे को खाने के लिए उद्यत हो उस समय चूहे को बचाना, इस प्रकार किसी भी मरते हुए जीव को बचाना।
3. मनुष्य या गाय, कबूतर आदि कोई भी प्राणी एक्सीडेंट आदि कारण से घायल हो गया हो तो अपने कार्य गौण करके सेवा करना। (सेवा के तरीकों की भलीभांति जानकारी न होने पर प्राणी मित्र संस्थाओं, पशु चिकित्सालयों से भी सहयोग लिया जा सकता है।)
4. जीवों को धर्म के वास्तविक स्वरूप का बोध कराना। यथा-कुव्यसनी व्यक्तियों का मांस भक्षणादि छुड़वाना।
5. नाखुन काटकर सीधा कचरे या रास्ते में नहीं डालना। क्योंकि यदि कबूतर आदि पक्षी दाना चुगते हुए गलती से नाखुन मुंह में लेकर निगलने लगे, उस दौरान नाखुन गले में अटकने से कबूतर आदि पक्षियों की मृत्यु भी हो सकती है। अतः नाखुन को काटकर छोटे से कपड़े में अच्छे से बांधकर उसके बाद उसे उचित स्थान पर डाला जा सकता है।

   इसी प्रकार बहनें टूटे हुए बालों का गुच्छा बनाकर उसे खुले कचरे में न डालें। ऐसा प्रत्यक्ष देखा गया है कि बालों के गुच्छे में पांव फँसने के कारण कबूतर छटपटा रहा था। किसी दयावान श्रावक के द्वारा पांवों में फंसे हुए बाल निकालने पर वह कबूतर उड़ गया।
6. पक्षियों को ऐसी जगह दाना-पानी नहीं डालना, जहाँ कुत्ता-बिल्ली वगैरह उन पर झपट्टा मारकर उन्हें मार डाले।
7. पतंग नहीं उड़ाना क्योंकि पतंग डोरी (मांजा) में अटककर कई (पंचेन्द्रिय) पक्षियों की मृत्यु हो जाती है या वे जख्मी हो जाते हैं। अनुकम्पा भाव से प्रेरित होकर पतंग उड़ाने का त्याग करना।
8. मनोरंजन के लिये तोता आदि पक्षियों को पिंजरे में डालकर नहीं रखना, Fish Tank नहीं रखना, हाथी-घोड़े आदि की सवारी नहीं करना।
9. एक बार अब्रह्मचर्य (मैथुन) सेवन से अनेक (पंचेन्द्रिय) जीवों की हिंसा होती है अतः अधिक से अधिक ब्रह्मचर्य का पालन करना। स्त्री को गर्भवती अवस्था में तो अवश्य ही ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, जिससे गर्भवती संतान को पीड़ा न हो, इस प्रकार जीव

अनुकम्पा भाव से ब्रह्मचर्य का पालन करना।

सत्व = पृथ्वीकाय, अप्काय (पानी), तेउकाय (अग्नि), वायुकाय

सत्व अनुकम्पा करने से सातावेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

पृथ्वीकाय पर अनुकम्पा इस प्रकार से की जा सकती है-

1. किसी भी खाद्य पदार्थ में ऊपर से नमक नहीं लेना।
2. स्लेट पर लिखने की कलम (कच्ची पेंसिल, बरता) का उपयोग नहीं करना। (बच्चों को कलम के स्थान पर चॉक (Chalk) लिखने के लिए दी जा सकती है।)

   ***Note** - कलम (कच्ची पेंसिल, बरता) सचित्त होती है एवं चॉक अचित्त होती है।*
3. रंगोली सचित्त होती है। अत: दीपावली आदि त्यौहार के प्रसंग पर भी रंगोली नहीं बनाना क्योंकि बनाई हुई रंगोली कितने ही लोगों के पांवों के नीचे आती है, गाड़ियां भी उसके ऊपर से आती-जाती है जिससे असंख्य पृथ्वीकाय के जीवों की हिंसा होती है कदाचित् संत म.सा. गोचरी के लिए पधारे उस समय किसी के पांव के नीचे रंगोली हो तो वह व्यक्ति असूझता (संतों को आहार देने के अयोग्य) होता है, वह सुपात्रदान का लाभ नहीं ले सकता है तथा गोचरी वहराने के लिए आते समय किसी के पांव के नीचे रंगोली आ जाये तो घर असुझता हो जाता है। (अर्थात् संत उस दिन उस घर से कुछ भी नहीं ले सकते।) अत: हम विवेक रखते हुए सत्व अनुकम्पा भाव से रंगोली न बनायें, जिससे रंगोली के कारण से हमारा घर भी असुझता नहीं होगा।

अप्काय पर अनुकम्पा इस प्रकार से की जा सकती है-

1. घर पर जो बर्तन धुलते हैं उन्हें सीधा नल के नीचे साबुन से धोने पर पानी भी अधिक लगता है तथा उस पानी का पुनः कोई उपयोग भी नहीं हो पाता। इसके स्थान पर यदि अलग से बाल्टी आदि में पानी लेकर राख से बर्तन धोये जाये तो पानी भी कम लगता है तथा वह धोवन पानी स्वयं भी पीने में उपयोग कर सकते हैं अथवा साधु-संतों का योग मिलने पर सुपात्रदान का लाभ प्राप्त कर सकते हैं अथवा सूर्यास्त तक किसी भी प्रकार से उस पानी का उपयोग न होने पर शाम को बर्तन आदि धोने में पुनः इस पानी का उपयोग किया जा सकता है। सत्व अनुकम्पा भाव से इस प्रकार साबुन की जगह राख से बर्तन धोने का विवेक रखना।
2. नदी, तालाब, स्वीमिंग पूल में नहाने का त्याग करना।
3. Shower, Hand Shower या सीधा नल के नीचे नहाने का त्याग या मर्यादा करना।
4. सीधा नल चालू करके मंजन, Shaving आदि करने से पानी का उपयोग ज्यादा होता है उस स्थान पर गिलास या लोटे में पानी लेकर मंजन आदि करने से बहुत कम पानी से काम चल सकता है।
5. अनावश्यक रूप से दिन में बार-बार हाथ-मुंह धोने की आदत नहीं रखना।
6. महीने में कम से कम 2 दिन नहाने का त्याग रखना तथा नहाने में अधिक से अधिक 1 बाल्टी से ऊपर पानी का उपयोग नहीं करना।
7. किसी भी Dress को जितने दिन तक आराम से पहना जा सकता है तब तक उसे धोने में नहीं डालना। आपको यदि प्रतिदिन Same Dress नहीं पहनना है तो आप चार से पाँच Dress रखकर बदल-बदल कर पहन सकते हैं पर एक दिन पहनकर सीधा उसे धुलवाना उचित नहीं है क्योंकि 1 Dress के धुलने में असंख्य अप्काय के जीवों की हिंसा होती है। फिर हर बार धुले वस्त्र पर इस्त्री (Iron) करने पर अकारण तेउकाय के जीवों की भी हिंसा होगी। जबकि एक बार पहना हुआ वस्त्र समेट कर रखा हुआ पुनः उपयोग में लिया जा सकता है। (समय की भी बचत होती है)।
8. कोई भी घर का कार्य हो कपड़े धोना, बर्तन धोना इन सब में पानी का प्रयोग आवश्यकता से अधिक नहीं करना। (कम से कम करना)।

तेउकाय पर अनुकम्पा इस प्रकार से की जा सकती है-

1. लाइट, पंखा, मोबाइल आदि किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक साधनों का उपयोग करने पर असंख्य तेउकाय के जीवों की हिंसा होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए इलेक्ट्रॉनिक साधनों का अनावश्यक उपयोग नहीं करना। यथा- फालतू बैठे-बैठे मोबाइल चलाते रहना, लाइट, पंखा चालू करके छोड़ देना, परन्तु जाते हुए बंद करने का विवेक नहीं रखना, टीवी का चैनल अनावश्यक Change करते रहना, Computer पर Game खेलते रहना, अनावश्यक लाइट बंद चालू करना आदि।
2. हाथ में सेल की घड़ी नहीं पहनना। इससे अनेक फायदे है- I. सेल की घड़ी पहनने से जो तेउकाय के जीवों की विराधना होती है उससे बचेंगे। II. कभी भी म.सा. घर में पधारे तो सेल की घड़ी नहीं पहनी होने से आहार-पानी बहराने का लाभ ले सकते हैं।
3. कभी भूल से भी सेल की घड़ी पहनकर म.सा के चरण छू लिये तो अनावश्यक रूप से उसके कारण संत प्रायश्चित के भागीदार बनते हैं, सेल की घड़ी नहीं पहनने पर यह भूल भी नहीं होगी।

   इसी प्रकार Mobile Phone के विषय में भी समझना, घर में या दुकान में रहते हुए Mobile हमेशा पास में नहीं रखना आवश्यकतानुसार उपयोग करके पुनः यथा स्थान रख देना, जिससे हलन-चलन के निमित्त से अनावश्यक हिंसा नहीं होती है।

3. पटाखे नहीं जलाना। किसी भी प्रकार से, किसी भी कार्यक्रम में आतिशबाजी (Fire-works) नहीं करना, होलिका दहन, रावण दहन अथवा राजनैतिक रैली आदि में किसी तरह का पुतला आदि जलाने का काम नहीं करना।

वायुकाय पर अनुकम्पा इस प्रकार से की जा सकती है-

1. एक बार ताली बजाने से, चुटकी बजाने से, सीटी बजाने से व खुले मुंह बोलने से असंख्य वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है, इस बात को ध्यान में रखते हुए धर्मस्थान में रहते हुए खुले मुंह नहीं बोलना (मुँहपत्ती धारण करना) तथा शेष सारी क्रियाएं तो कभी भी कहीं पर भी नहीं करना।
2. हवा से कपड़े उड़ने पर भी वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कपड़े सूखने के पश्चात् शीघ्र ही उतार लेने पर अनावश्यक रूप से वायुकाय के जीवों की हिंसा नहीं होती है, सत्व अनुकम्पा भाव से विवेक रखना।
3. एक बार फूंक मारने से असंख्य वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। इसलिए दूध, चाय, कॉफी आदि गरम वस्तुएं फूंक मार-मारकर नहीं पीना। फूंक मारता हुआ व्यक्ति असूझता (संतों को आहार देने के अयोग्य) होता है, वह सुपात्रदान का लाभ नहीं ले पाता या कभी-कभी संत-महापुरुषों को बहराते हुए किसी भी चीज में फूंक मारे तो घर भी असूझता हो जाता है।

   उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए फूंक मारने की आदत नहीं रखना।
4. कपड़ों को समेटते समय या पहनते समय जोर से नहीं झटकना।
5. कपड़े, झाड़ू आदि किसी भी चीज को ऊपर से नहीं पटकना। अकसर संत महापुरुषों के घर में पधारने पर बहनों के हाथ में कपड़े/झाड़ू आदि होते हैं तो वह सीधा ऊपर से पटक देती है जिससे घर असूझता हो जाता है अत: किसी भी चीज को ऊपर से नहीं गिराने का सदैव विवेक रखना।

दुःख = शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार का दुःख।

बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्व को दुःख देने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. अपने घर/दुकान या Function आदि में इतने जोर-जोर से टेप या माइक आदि लगाना, जिससे दूसरे लोग परेशान हो जाये।
2. घर में किसी की भी बात नहीं सुनना, मनमानी करना। किसी के साथ Commitment करके फिर उसे पूरा नहीं करना।
3. गरम-गरम पानी या फ्रिज का अत्यन्त ठंडा पानी Basin में या नाली आदि में डालना। यथा- बहुत बार ऐसा होता है कि चावल का मांड या कूकर का गरम पानी लोग सीधा नाली में डाल देते हैं। तेज गर्म या अत्यन्त ठंडे पानी से नाली में रहे त्रस-स्थावर सभी जीवों को बहुत ज्यादा पीड़ा होती है।
4. Toilet-Acid से धोने से बहुत अधिक त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा होती है।
5. किसी को Gift देने के लिए ऐसी वस्तुएं खरीद कर देना, जिससे जीवों की विराधना हो। जैसे- मिक्सी, प्रेस (Iron), फ्रिज, टीवी, वाशिंग मशीन, सेल की घड़ी आदि।
6. बहुत बार नौकरों को समय पर वेतन नहीं देने से उसके पूरे घर वालों को खाने-पीने आदि की बहुत परेशानी होती है।

***Note** - सातावेदनीय कर्म बंध के 5 से 10 तक के Points और असातावेदनीय कर्म बंध के 7 से 12 तक के Points Just विपरीत है अतः दोनों का विस्तृत वर्णन न करके सिर्फ असातावेदनीय कर्म बंध के 7 से 12 तक के Points का विस्तृत वर्णन आगे किया जायेगा।*

शोक = दीन भाव में लाना, उत्साह हीन करना, उदासीन करना, वियोगजन्य दुःख।

बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्व को शोक कराने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है यथा-

1. कोई व्यक्ति उत्साह से शुभ कार्य करने का विचार करे तो उस व्यक्ति के उत्साह को मंद करना, उसके श्रेष्ठ कार्य की बुराई करना।
2. अपने बेटे और सौतेले बेटे (Step Son) के साथ एक समान व्यवहार नहीं करना।
3. किसी भी व्यक्ति के पास जिस चीज की कमी है उसे उसका एहसास कराना। यथा- तुम तो बहुत गरीब हो, इतनी छोटी चीज भी नहीं खरीद सकते हो, मेरे घर में तो सारा Imported सामान है आदि।
4. घर में 4 मेहमान अलग-अलग जगह से आये तो उसमें से तीन की तो अच्छी तरह से खातिरदारी करना परन्तु एक की नहीं करना।
5. कोई असहाय व्यक्ति मदद की पुकार करे और सामने वाला व्यक्ति उसे लटकाता रहे जैसे- आज नहीं कल आना, कल नहीं परसों..., इस प्रकार किसी को मानसिक तकलीफ देना।
6. किसी की अत्यन्त प्रिय वस्तु को उससे अलग कर देना या छिपा देना।

झूराना = ऐसा शोक जिससे चिन्ता के मारे व्यक्ति का शरीर सूख जाये।

बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्व को झूराने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. किसी की कमजोरी का फायदा उठाकर बार-बार उसे परेशान, Blackmail करना।
2. किसी की गुप्त बात को लोगों के समक्ष प्रकट करना जिससे वह समाज में मुंह दिखाने के लायक न रहे।
3. सत्य-असत्य का निर्णय किये बिना आवेश, पूर्वाग्रह (Pre-Conceived notion) के वश किसी व्यक्ति पर दोषारोपण कर देना, सती या पतिव्रता नारी को कुलटा कहना, किसी व्यक्ति पर चोरी, व्यभिचारी या अन्य प्रकार का दोष लगाना। तलवार का घाव मरहम पट्टी से अच्छा हो सकता है पर इस प्रकार के कलंक का घाव गहरा व भयंकर होता है जो जिन्दगी भर नहीं भरा जा सकता।
4. कोई मालिक मान, क्रोधवश बेवजह किसी कर्मचारी को काम से निकाल दे या उसकी बेइज्जती करे तो ऐसे में उस पर निर्भर उसका पूरा परिवार संकट में आ जाता है।
5. विश्वास की बुनियाद (Basis) पर कोई व्यक्ति किसी के पास धरोहर रखता है, उस धरोहर पर ललचाकर धरोहर से मुकरने, उसे हड़प जाने, कम ज्यादा बताने से व्यक्ति बहुत अधिक दु:खी होता है।
6. बहुत बार वकील पैसों के लालच में आकर निर्दोष को अपराधी सिद्ध कर देते हैं। जिससे निरपराध व्यक्ति को सजा मिल जाती है और वह जीवनपर्यन्त दु:ख से दु:खी रहता है।

शोकपूर्वक रुलाना = ऐसा शोक जिससे व्यक्ति की आंखों से आँसू आ जाये।

बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्व को शोकपूर्वक रुलाने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. वृद्धावस्था के समय माता-पिता की बराबर सेवा नहीं करना।
2. पैसे व जमीन जायदाद के लिए भाई-भाई का आपस में लड़ना जिससे माँ-बाप बहुत ज्यादा दु:खी रहते हैं।
3. उत्शृंखल लड़कों (Eve Teasers) द्वारा रास्ते में, कॉलेज आदि में लड़कियों के साथ छेड़खानी, व्यंग्य आदि करना।
4. किसी की इतनी बेइज्जती करना कि आंखों से आंसू आ जाए।
5. किसी असहाय / कमजोर / गरीब / लाचार व्यक्ति का बहुत मजाक उड़ाना। ऐसा व्यक्ति भले ही सामने नहीं भी रोये, एकांत में वह व्यक्ति अपनी असहाय आदि अवस्था के कारण, लोग उसका कितना मजाक उड़ाते है यह सोच कर रोने लगता है।
6. सास-ससुर आदि के द्वारा बहू को दहेज कम लाने के कारण ताना मारना, उसके माता-पिता की बुराई करना आदि।

बहुत प्राण, भूत, जीव, सत्व को मारने पीटने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. बच्चे अच्छे से पढ़ाई न करे या बात न माने तो उन्हें मारना-पीटना। बच्चों को प्यार से समझाना चाहिये, परन्तु मारना-पीटना उचित नहीं है। स्कूल या घर में बच्चों को मारने-पीटने से, ईर्ष्या, द्वेषवश किसी को मारने-पीटने से।
2. बच्चों को घर/दुकान आदि में नौकरी पर रखकर यदि वह बच्चा कुछ भी काम ठीक से न करे तो उसे मारना। इस प्रकार किसी भी नौकर-चाकर आदि को मारना।
3. मस्ती में दूसरे व्यक्ति को चिमटी (Pinch) आदि मारकर उसके साथ छेड़खानी करना अथवा भाई-बहन या दोस्तों के साथ लड़ाई-झगड़ा करना।
4. बहुत लोगों की ऐसी आदत होती है कि जिन जानवर, कुत्ते आदि से अपना कुछ लेना-देना नहीं है ऐसे ही रास्ते चलते-फिरते कुत्ते आदि को पत्थर से मारकर उन्हें परेशान करना।
5. घर के दरवाजे पर गाय, कुत्ते आदि आ जाए तो रास्ते से हटाने के लिए उन्हें मारना या बाड़े आदि में डालने के लिए जानवरों को धकेल-धकेल कर या मार-पीट कर आगे बढ़ाना।
6. सड़क पर यदि किसी झगड़े में एक व्यक्ति दूसरे को मार रहा हो तो बिना सच्चाई जाने उस व्यक्ति की पिटाई करना।

परिताप = शारीरिक रूप से अत्यधिक परेशान करना।

1. किसी गरीब व्यक्ति की मजबूरी का लाभ उठाकर उससे अत्यधिक श्रम कराना।
2. अपने यहाँ काम करने वाले लोगों को अनावश्यक रूप से परेशान करना।

   यथा–बहुत बार ऐसा देखा जाता है कि मालिक को नौकर खाली बैठे हुए फूटी आंख सुहाता नहीं है। नौकर थककर 5 मिनिट विश्राम के लिए बैठता है तो कहते हैं अरे! खाली बैठा है इतना काम पड़ा है, दिखता नहीं है या कुछ काम नहीं हो तो भी अरे! जा, वहाँ से वह चीज ले आ, उस व्यक्ति को अमुक चीज देकर आ जा आदि।
3. सभी जगहों पर दादागिरी करके दूसरे लोगों को परेशान करना। कॉलेज में Senior student द्वारा नये Student के साथ रेगिंग (Ragging) आदि करके परेशान करना।
4. शरारती बच्चे/व्यक्ति बिना मतलब दूसरों को परेशान करते हैं यथा– कभी किसी की चप्पल छिपा देंगे, कभी पेन, कॉपी आदि खराब कर देंगे, कभी बिना पूछे दूसरे का टिफिन खा जायेंगे, कभी कोई बैठने लगता है तो उसकी पीछे से टेबल/कुर्सी आदि खिसका देंगे। इस प्रकार दूसरे लोगों को परेशान करते रहना।
5. किसी–2 व्यक्ति की आदत होती है खाली बैठे–बैठे कुछ न कुछ उल्टे काम करते रहना। यथा–कीड़ी चल रही है तो उसके चारों तरफ पानी डाल देना या पानी से लकीर खींच देना, फिर देखते रहना कि यह चींटी अब कैसे निकलती है। मक्खी को पकड़ने का प्रयास करना या दो जानवरों की पूंछ को आपस में बांध देना।
6. घर में काम करने वाले नौकर–चाकर यदि बीमार है तो भी उनसे जबरदस्ती काम कराना।

मोहनीय कर्म

मोहनीय कर्म- मोहनीय = मोहित करने वाला। जिस कर्म के उदय से आत्मा मोहित हो अर्थात् सत्-असत्, अच्छे-बुरे, हित-अहित के ज्ञान से रहित हो उसे मोहनीय कर्म कहते हैं।

मोहनीय कर्म बंध के 6 कारण

1. तीव्र क्रोध करने से
2. तीव्र मान करने से
3. तीव्र माया करने से
4. तीव्र लोभ करने से
5. तीव्र दर्शन मोहनीय से
6. तीव्र चारित्र मोहनीय से

क्रोध = गुस्सा, आवेश
मान = घमंड, अहंकार
माया = कपट, सच्चाई को छिपाना, दिखावा (Deceive)
लोभ = आसक्ति, लालच (Greed), आकांक्षा (Desire)

दर्शन मोहनीय - यहाँ दर्शन मोहनीय में सिर्फ मिथ्यात्व मोहनीय को लिया गया है। क्योंकि मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से ही मोहनीय (मिथ्यात्व मोहनीय) कर्म का बंध होता है।

चारित्र मोहनीय - यहाँ चारित्र मोहनीय में नौ नोकषाय लिये गये हैं।

उपर्युक्त 6 पॉइंट में तीव्र यह विशेषण व्यवहार नय से (मोटे रूप से) लगाया गया है। क्योंकि आगम व कर्मग्रंथों में स्पष्ट वर्णन है कि 10वें गुणस्थान में रहे हुए सूक्ष्म लोभ को छोड़कर शेष सभी प्रकार के क्रोध, मान, माया, लोभ के उदय से मोहनीय कर्म का बंध अवश्य होता है।

नोकषाय मोहनीय- नोकषाय = जो स्वयं कषाय नहीं है परन्तु कषायों को प्रेरित (उत्तेजित) करता है। जिस कर्म के उदय से कषाय उत्तेजित होते हैं उसे नोकषाय मोहनीय कर्म कहते हैं।

नोकषाय मोहनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ 9 हैं:-

1. **स्त्रीवेद**- वेद = कुशील सेवन की अभिलाषा।

   जिस कर्म के उदय से स्त्री के भीतर में कुशील सेवन की अभिलाषा उत्पन्न हो, उसे स्त्रीवेद मोहनीय कर्म कहते हैं।

2. **पुरुषवेद**- जिस कर्म के उदय से पुरुष के भीतर में कुशील सेवन की अभिलाषा उत्पन्न हो, उसे पुरुषवेद मोहनीय कर्म कहते हैं।

3. **नपुंसक वेद**- जिस कर्म के उदय से नपुंसक के भीतर में कुशील सेवन की अभिलाषा उत्पन्न हो, उसे नपुंसकवेद मोहनीय कर्म कहते हैं।

   Note - स्त्री के भीतर में प्रमुख रूप से पुरुष के साथ ही कुशील सेवन की अभिलाषा उत्पन्न होती है परन्तु कदाचित् स्त्री, नपुंसक के प्रति भी भोगों की अभिलाषा उत्पन्न हो सकती है। इसी प्रकार पुरुष, नपुंसक के लिये भी समझ लेना चाहिए।

4. **हास्य**- लज्जा आदि के निमित्त से चित्त का विशेष प्रकार का विकार जो हँसी के रूप में अभिव्यक्त होता है, उसे हास्य कहते हैं। जिस कर्म के उदय से बाह्य निमित्त के मिलने पर अथवा न मिलने पर भी हास्य हो, उसे हास्य मोहनीय कर्म कहते हैं।

5. **रति**- इष्ट विषय सामग्री मिलने पर अथवा अनिष्ट विषय सामग्री दूर होने पर प्रीति होती है, उसे रति कहते हैं। जिस कर्म के उदय से बाह्य निमित्त के मिलने पर अथवा न मिलने पर भी रति हो, उसे रति मोहनीय कर्म कहते हैं।

6. **अरति**- इष्ट की अप्राप्ति और अनिष्ट की प्राप्ति होने पर अप्रीति होती है, उसे अरति कहते हैं। जिस कर्म के उदय से बाह्य निमित्त के मिलने पर अथवा न मिलने पर भी अरति हो, उसे अरति मोहनीय कर्म कहते हैं।

7. **भय**- जिस कर्म के उदय से बाह्य निमित्त के मिलने पर अथवा न मिलने पर भी भय पैदा हो, उसे भय मोहनीय कर्म कहते हैं।

8. **शोक**- जिस कर्म के उदय से बाह्य निमित्त के मिलने पर अथवा न मिलने पर भी शोक उत्पन्न हो, उसे शोक मोहनीय कर्म कहते हैं।

9. **जुगुप्सा**- जिस कर्म के उदय से बाह्य निमित्त के मिलने पर अथवा न मिलने पर भी घृणा पैदा हो, उसे जुगुप्सा मोहनीय कर्म कहते हैं।

तीव्र क्रोध करने से मोहनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. मन में ऐसी धारणा रखना कि घर में जो छोटे हैं या जो नौकर चाकर हैं या जो मेरे से नीची पोस्ट पर काम करने वाले हैं उनका कर्त्तव्य है कि मेरा आदर-सत्कार विनय-बहुमान करे तथा बड़ा या ऊँची पोस्ट पर होने के कारण मेरा अधिकार है कि उनकी गलती के अनुसार मैं उन्हें डांटू-फटकारूं या अनुशासित करूं। उपर्युक्त प्रकार की धारणा रखने पर अपेक्षाएँ बढ़ जाती है तथा सारी अपेक्षाएँ पूर्ण होना संभव न होने से हर छोटी-छोटी बात पर गुस्सा करना।
2. परिवार के किसी भी सदस्य के द्वारा या स्टाफ के द्वारा या मित्र वर्ग के द्वारा जरा सा भी अपमान किये जाने पर उनके ऊपर भड़क जाना या मन में बदले की भावना बना लेना।
3. आपसी लड़ाई में घर के बर्तन तोड़ना या पटकना, कमरे या अलमारी के दरवाजे जोर से बंद करना।
4. प्रतिकूल परिस्थिति (Unfavourable Situation) उत्पन्न होने पर आर्त्तध्यान या चिन्ता करना जिससे क्रोध उत्पन्न होता है- व्यक्ति, काल, समाज या हालात पर।
5. भोजन स्वादानुसार ना हो तो क्रोधवश खाना नहीं या झूठा छोड़ना, बर्तन जोर से पटकना, भोजन बनाने वाले के ऊपर बरस जाना।
6. कभी कोई बात मनवाने के लिए हठवश अनशन (Hunger Strike) करना-दूसरों को दबाने की चेष्टा करना।
7. बस, ट्रेन में बैठने के लिए जगह को लेकर झगड़ा या विवाद करना।
8. ऑफिस या व्यवसाय का गुस्सा घर में पत्नी या बच्चों पर निकालना।
9. ऑफिस या व्यापार में Worker से गलती होने पर आवेशवश अनर्गल (Abusive) बोलना, व्यक्तिगत आक्षेप लगाना।

तीव्र मान करने से मोहनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. अपने कुल / जाति / धर्म / रंग/ राष्ट्रीयता भाषा इत्यादि का अभिमान करना, अन्य सभी को निकृष्ट समझना या उनके सत्कार्य / सत्यवचन / सद्भावना में भी दोष निकालकर तिरस्कार करना।
2. अत्यधिक अहं रखना जिससे थोड़ी-सी कहासुनी होने पर मुँह फेर लेना।
3. अहंकारवश सामूहिक प्रसंगों में सहयोग ना करना जैसे- शवयात्रा में कंधा ना देना, गाड़ी से ही सीधे श्मशान पहुँचना, शादी, सामूहिक भोज में कभी भी परोसगारी नहीं करना आदि।
4. अपने से पैसे, शिक्षा आदि में नीचे स्तर के व्यक्ति के द्वारा टोके जाने पर स्वीकार करने के बजाय ऐसा सोचना या कहना कि तेरी क्या औकात! जो मुझे टोकता है।
5. गलती होने पर तथा स्वयं को गलती समझ आने के बावजूद क्षमायाचना नहीं करना।
6. शादी-ब्याह, स्वामीवत्सल, स्नेहमिलन, गुरुदर्शन यात्रा आदि में उचित मान ना मिलने पर बखेड़ा खड़ा करना, तमाशा करना।
7. जिन धार्मिक कार्यों में किसी और का नाम हो, उसमें सहयोग न करना या राजनीति करके व्यवधान डालना।
8. संघ में पद इत्यादि ना मिलने पर अन्य संघ से जुड़ना या मूल संघ में विघटन करना या कराना।
9. ऐसी आशा रखना कि व्याख्यान आदि में म. सा. या संचालनकर्त्ता नाम लेवें।

तीव्र माया से मोहनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1 ऑफिस या सामाजिक कार्यक्रमों में नहीं जाने के लिए पारिवारिकजनों की बीमारी का बहाना बनाना।

2. टीचर ने जो होमवर्क दिया है उसे स्वयं समझकर नहीं करना परन्तु इधर उधर से कॉपी करना।

3. 'फूट डालो राज करो' या ''दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है'' ऐसी कहावतों का सहारा लेकर आचरण करना।

4. गुरु दर्शन यात्रा के नाम से जाकर बालाजी दर्शन, बाजार दर्शन, निकटवर्ती पर्यटन स्थल (Tourist Place) का दर्शन करना, गुरु के समीप बैठकर तो दो सामायिक भी लाचारी (दबाव) से करना।

5. किसी के अति निकट जाकर चापलूसी/दोस्ती करके उसके सारे भेद ले लेना या पैसा हड़पकर नौ-दो ग्यारह हो जाना।

6. समाज में नाम के लिए दान राशि घोषित कर देना और देने के समय मायापूर्वक टाल-मटोल करना।

7. कभी दुकान वाला गलती से कोई Item Bill में लगाना भूल जाये तो उसे नहीं बताना। Return में ज्यादा पैसा दे तो उसे वापस नहीं देना।

8. स्वयं की गलती की सजा दूसरे को मिलते देखकर या जानकर भी चुप रहना।

9. मोहन ने धार्मिक कार्य या सहयोग की भावना से सोहन को फोन किया। सोहन नंबर देखकर समझ गया कि मोहन का फोन है। उसने अपने बेटे से कहा कि तुम फोन उठाना और कहना कि पापा अभी घर में नहीं है।

तीव्र लोभ से मोहनीय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. पाँच इन्द्रियों (Five sense organs) के पोषण के लिए किसी भी प्रकार की प्रवृत्ति करना। यथा- Tasty खाना मिलने पर प्रसन्न होना, मन अनुरूप न मिलने पर नाक मुँह आदि सिकोड़ना, Bad-smell आने पर दु:खी होना।
2. अपने व अपने परिवार के स्वार्थ के खातिर दूसरों को नुकसान पहुँचाना।
3. दुनिया में या पड़ोसी घरों में जो-जो अच्छी-अच्छी वस्तुएँ हैं वे सभी मुझे भी मिले ऐसी चाह रखना।
4. मैं कैसे अधिक से अधिक पैसे कमा सकता हूँ इसकी Planning करते रहना।
5. किरायेदार द्वारा पैसे के लालच में जगह दबाए रखना।
6. घर में पैसा/जमीन होते हुए स्वयं को दिवालिया (Bankrupt) घोषित करना।
7. अधिक कमाने के लालच में कंपनी या मालिक के गोपनीय दस्तावेज/शोधपत्र विरोधी पक्ष को देना।
8. साधु-संत/सतियाँ जी की सेवा आदि इस भावना से करना कि इससे कोई दैवीय कृपा हासिल हो जाए। मेरा Business और अधिक अच्छा चलने लगे, घर-परिवार में शांति रहे आदि।
9. कमीशन के लालच में सही-गलत Investment की सलाह देना।

आयु कर्म

आयु कर्म– जिस कर्म के उदय से आत्मा अमुक समय तक किसी गति में रुकी रहे उसे आयु कर्म कहते हैं।

आयु कर्म बंध के 16 कारण

नैरयिक आयु बंध के 4 कारण
तिर्यञ्च आयु बंध के 4 कारण
मनुष्य आयु बंध के 4 कारण
देव आयु बंध के 4 कारण

नैरयिकायु– जिस कर्म के उदय से आत्मा अमुक समय तक नरक गति में रुकी रहे उसे नैरयिकायु कर्म कहते हैं।

नैरयिक आयु बंध के 4 कारण

1. महाआरम्भ करने से
2. महापरिग्रह करने से
3. मांसाहार करने से
4. पंचेन्द्रिय वध करने से

महाआरम्भ = आरम्भ = हिंसा। महाआरम्भ = जिन कार्यों से बहुत अधिक त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा होती है।

महाआरम्भ करने से नैरयिकायु का बंध होता है। यथा-

1. बड़े-बड़े बिल्डर (Construction) या ठेकेदारी का काम करना।
2. बड़ी-बड़ी फैक्ट्री या Transport का काम। यथा- भिलाई स्टील प्लांट आदि।
3. पटाखादि निर्माण करना या बेचने का कार्य करना।
4. मदिरा बनाने, बेचने का धंधा करना।
5. चूहा, कॉकरोच, मच्छर या कीड़ों आदि को मारने की दवा बनाने व बेचने का कार्य करना।

(15 कर्मादान का व्यापार महाआरम्भ के अन्तर्गत समझना चाहिए।)

Note- 15 कर्मादान का स्पष्टीकरण प्रतिक्रमण सूत्र संशोधित पुस्तक में देखें।

महापरिग्रह = परिग्रह = मूर्च्छा, आसक्ति। महापरिग्रह = अत्यन्त गहरी मूर्च्छा, आसक्ति।

महापरिग्रह करने से नैरयिकायु का बंध होता है। यथा-

1. अपने शरीर, घर, परिवार, वस्त्र, आभूषण आदि किसी के प्रति भी गहरी आसक्ति रखना।
2. अपनी मान-प्रतिष्ठा के प्रति गहरी लालसा होना। यथा- विपुल धन-सम्पत्ति होने पर भी असहाय को एक पैसे की भी सहायता करने की नीयत न रखना परन्तु जहाँ अपने नाम का पत्थर लगता हो वहाँ लाखों का दान देना।
3. कामोत्तेजक औषधियों का भरपूर सेवन करना तथा अपनी स्त्री/पुरुष के साथ भोगों की गहरी अभिलाषा रखना।

   चक्रवर्ती की स्त्री रत्न मरकर अवश्य नरक में जाती है क्योंकि उसको चक्रवर्ती के साथ काम-भोग सेवन की अत्यन्त गहरी अभिलाषा होती है।
4. धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य के प्रति अत्यन्त गहरी आसक्ति रखना। चक्रवर्ती सम्राट यदि ऐश्वर्य का उपभोग करते हुए ही काल करे तो नियमा नरक गति और यदि ऐश्वर्य का त्याग करके संयम जीवन स्वीकार करे तो नियमा उसी भव में मोक्ष या वैमानिक देवों की गति प्राप्त करते हैं।
5. कुछ लोगों को धन के प्रति इतनी गहरी आसक्ति होती है कि अरबों-खरबों की सम्पत्ति होने पर भी कंजूस होते हैं। न स्वयं अच्छे से खाते-पीते व अन्य सामग्रियों का उपभोग करते हैं और न दूसरों को करने देते हैं। कथाओं में मम्मण सेठ का उदाहरण मिलता है, उसे धन-सम्पत्ति के प्रति गहरी आसक्ति थी। उसने हीरे-मोती का जड़ा हुआ एक बैल बना लिया परन्तु न स्वयं धन का अच्छे से उपभोग कर पाया और न कभी किसी को दान दिया। वह मरकर सातवीं नरक में गया।

मांसाहार करने से नैरयिकायु का बंध होता है। यथा-

1. मांस-मछली, अण्डे आदि का सेवन करना।
2. लाल निशान वाली वस्तुओं का खाने में उपयोग करना।
3. जिन वस्तुओं में अंडा-मांस, चर्बी, जिलेटिन आदि डाला जाता है उन खाद्य पदार्थों का उपयोग करना।

   Note- ऊपर से हरा निशान होने पर भी बहुत सारी वस्तुओं में माँसाहार रहता है अत: अच्छे से जानकारी किये बगैर नहीं खाना चाहिए।
4. माँसाहार युक्त औषधियों का प्रयोग करना।
5. Veg और Non Veg Mix होटल में भोजन करना।

   Note- Veg & Non Veg Mix होटल में बहुत बार Non Veg के बर्तन Veg वस्तुओं के बनाने में उपयोग होते हैं या कभी Non Veg खाद्य पदार्थ की बची हुई Gravy etc. Veg खाने में मिला दी जाती है।

पंचेन्द्रिय वध करने से नैरयिकायु का बंध होता है। यथा-

1. गर्भपात करना, करवाना या करने की सलाह देना तथा मेडिकल में गर्भपात आदि की औषधियाँ बेचना।
2. गर्भ न ठहरे इसलिए मैथुन सेवन से पूर्व या पश्चात् औषध लेना।
3. जो सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री जानवरों को मारकर बनाई जाती है उसका उपयोग करना।
4. ऐसी कंपनी के शेयर खरीदना जो पंचेन्द्रिय हिंसा के व्यापार से जुड़ी हुई हो।
5. जिन वस्तुओं के निर्माण में तो पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा नहीं होती हो परन्तु उनकी Testing के लिए पंचेन्द्रिय जीवों की जान से खेला जाता हो उनका उपयोग करना।
6. स्वयं मांसादि नहीं खाना परन्तु व्यापार, प्रतिष्ठादि के लिए, इलेक्शन में वोट प्राप्त करने के लिए दूसरे लोगों को मांसादि खिलाना।
7. द्रव्य से हिंसा न करने पर भी भावों से हिंसा करना। यथा- यह आदमी मर जाये तो बहुत अच्छा हो, भारत को पाकिस्तान पर हमला करके उसे खत्म कर देना चाहिए। भले ही हम किसी को नहीं मार रहे हैं लेकिन तण्दूल मत्स्य की तरह हम भी नैरयिकायु का बंध कर सकते हैं।
8. मन में किसी के प्रति बदले की भावना रखना। यथा- मौका मिलेगा तो अमुक व्यक्ति को छोड़ूंगा नहीं और ऐसे मौके की ताक में रहना, उसे मारने के लिए Planning करते रहना।
9. घर, दुकान आदि में सांप आदि जहरीले जानवर निकलने पर, कहीं ये अपना नुकसान न कर दे, यह सोचकर उसे मरवा डालना।

तिर्यञ्चायु- जिस कर्म के उदय से आत्मा अमुक समय तक तिर्यञ्च गति में रुकी रहे उसे तिर्यञ्चायु कहते हैं।

तिर्यञ्च आयु बंध के 4 कारण

1. माया करने से
2. गूढ़ माया करने से
3. असत्य बोलने से
4. न्यूनाधिक नापने तोलने से

माया = कपट, धोखा।

Point No. 1 माया करने से, इसका विस्तृत वर्णन मोहनीय कर्म बंध के Point No. 3 (तीव्र माया करने से) में जिस प्रकार वर्णन किया गया है उसी प्रकार यथायोग्य रूप से यहाँ भी समझ लेना चाहिए।

गूढ़ माया = कपट पूर्वक असत्य बोलना, एक कपट को छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलना।

गूढ़ माया करने से तिर्यञ्चायु का बंध होता है। यथा-

1. पुत्र-पुत्री आदि की शादी के दौरान उनकी उम्र कम/ज्यादा बताना, उनके अवगुणों को छिपाना, कम पढ़ा लिखा हो तो भी Duplicate certificate बताना, किसी के द्वारा ज्यादा पूछताछ करने पर चतुराई पूर्वक अपने झूठ को सच में साबित करना आदि।
2. मैं College या tuition जा रहा हूँ ऐसा घर में कहकर दोस्तों के साथ मस्तियां करना। किसी परिवार वालों के द्वारा देखे जाने पर फिर बहाने आदि बनाकर अपने आपको सच साबित करने का प्रयास करना।
3. म. सा. गांव में पधारे हैं ऐसा मालूम पड़ने पर श्रद्धावश परन्तु अज्ञानता से आपने रोज से जल्दी रसोई बनाकर तैयार कर दी, म. सा. आपके घर पधारे, म. सा. ने पूछा-बाईजी! खाना रोज कब बनता है, उस समय झूठ बोलते हुए म. सा.! हमारे यहाँ तो सुबह आठ बजे ही खाना बन जाता है, बच्चे आदि के टिफिन में डालने के लिए खाना जल्दी बनाना ही पड़ता है।

आओ! इसे संवाद से जानें-

संवाद-I : म.सा. का बाईजी के साथ विसंवाद-

म. सा.- बच्चे कितने बजे स्कूल जाते हैं।

बाईजी- 10 बजे

म. सा.- अभी तो 2 घण्टे टाइम पड़ा है फिर इतनी जल्दी क्यों बनाया?

बाईजी- काम वाली बाई जल्दी चली जाती है, फिर बर्तन कौन धोयेगा? इसलिए पहले ही सारा काम निपटा लेती हूँ। संयोग से उसी समय काम वाली बाई वहाँ आ गई।

म. सा.- क्यों तुम कितने बजे तक यहाँ काम करती हो?

नौकरानी- 12 बजे तक।

अब सेठानी जी की बोलती बंद हो गई। इस तरह एक झूठ को छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलना।

संवाद-II : म.सा. का श्रावकजी (मोतीलाल सा.) के साथ विसंवाद-

म. सा.- कांई मोतीलाल सा.! घणा दिनां र बाद दरसन करणे आया?

मोतीलाल सा.- कांई करां बापजी! जी तो घणोई कटीजे, पण जी सोरो कोनी। डॉ. बारे घूमण-फिरण ने मना कर्‌यो है।

म. सा.- घरे तो सामायिक करता होवोला?

मोतीलाल सा.- घर में थिरचा कठै बापजी, कणई बेटे ने जीमण खातर भेजणे वास्ते दुकान जाणो पड़े, कणई पोते ने स्कूल छोड़ने जाणो पड़े।

म. सा.- अबार तो थे केरिया था कि डॉ. सा. ज्यादा घूमण-फिरण णे मना कर्‌यो, पछे थे दुकान, स्कूल, साग लावण्ण ने किंया जाओ?

मोतीलाल सा.- बापजी! दुकान, स्कूल, मण्डी तांई भी नी जाऊँला तो पग जाम हु जाई।

म.सा.- मोतीलाल सा. जद थे दुकान जाइ सको, मंडी जाइ सको तो विउं तो थानक घणो नेड़ो है।

सेठजी रो मुंडो निचो हुइग्गो, अबे सेठजी खने जवाब कोनी।

असत्य बोलने से तिर्यञ्चायु का बंध होता है। यथा-

1. क्रोध, लोभ, भय, हास्य, उतावलेपन आदि किसी भी कारण से झूठ बोलना।
2. घर पर फोन आता है। मां बच्चे को बोलती है- बोल दे, मम्मी घर पर नहीं है, इस प्रकार स्वयं झूठ बोलना एवं बच्चे में भी झूठ बोलने के कुसंस्कार डालना।
3. अपने से कोई गलती हो जाये उसे छिपाने के लिए झूठ बोलना। यथा- घर में हमनें कोई चीज बनाई और खराब हो जाने पर दूसरे का नाम बता देना।
4. बच्चों के लिए झूठ बोलना। यथा- देख दूध पी ले नहीं तो हाऊ को पकड़वा दूंगी।
5. अपने को कोई काम नहीं करना है परन्तु सीधा ना बोलकर झूठे बहाने बनाना।
6. बच्चों की टिकिट न लेनी पड़े या 1/2 टिकिट से काम चल जाये यह सोचकर बच्चों की वय (Age) कम बताना।
7. घर में सामान होते हुए भी यह कहना कि अमुक चीज खत्म हो गई यथा- थोड़ा शक्कर, गेंहू आदि होने पर भी इस प्रकार कहना कि शक्कर, गेंहू आदि का एक दाना भी नहीं है।

न्यूनाधिक माप-तोल करने से तिर्यञ्चायु का बंध होता है। यथा-

1. रद्दी-पेपर आदि बेचते समय वजन ज्यादा बताना।
2. गाड़ी में गैस, पेट्रोल आदि कम भरना।
3. तराजू का माप (Balance) बराबर नहीं रखना।
4. दूध व कपड़ा मापने में कम ज्यादा करना।
5. Packet की वस्तु का कोई वजन नहीं करता ऐसा सोचकर कम वजन डालकर ज्यादा वजन लिख देना।

मनुष्यायु– जिस कर्म के उदय से आत्मा अमुक समय तक मनुष्य गति में रुकी रहे उसे मनुष्यायु कर्म कहते हैं।

मनुष्य आयु बंध के 4 कारण

1. प्रकृति की भद्रता से
2. प्रकृति की विनीतता से
3. दया भाव रखने से
4. मत्सर भाव रहित होने से

भद्रता = भले स्वभाव से दूसरों को दु:ख नहीं देने वाला।

दया = अनुकम्पा।

Point No.1 & Point No. 3 प्रकृति की भद्रता व दया (अनुकम्पा) भाव रखने से, इन दोनों का विस्तृत वर्णन सातावेदनीय कर्म बंध के कारणों के प्रसंग में जिस प्रकार किया है उसी प्रकार यथायोग्य रूप से यहाँ भी समझ लेना चाहिए।

विनीतता = विनयवान।

प्रकृति की विनीतता-

1. माता-पिता, गुरुजनों का आदर बहुमान करने वाला।
2. गुरुजनों की आज्ञा को शिरोधार्य करने वाला, उनको पलटकर जवाब नहीं देने वाला, उनसे कुतर्क-वितर्क नहीं करने वाला।
3. गुरुजनों के समीप रहना, श्रेयस्कर मानने वाला एवं स्वच्छंदता अर्थात् अलग से रहने की चाह न करने वाला।
4. किसी के भी द्वारा गलती बताये जाने पर सहजतापूर्वक गलती को स्वीकार करके गलती बताने वाले का उपकार मानने वाला।
5. अपनी हर प्रवृत्ति गुरुजनों के अनुरूप बनाने का प्रयत्न करने वाला अर्थात् गुरुजनों को प्रसन्न रखने की चाह रखने वाला जिससे सहज ही गुरुजनों का आंतरिक आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

मत्सर = ईर्ष्या, जलन, दूसरों के गुणों से जलने वाला।

मत्सर भाव रहित होने से मनुष्यायु का बंध होता है-

1. ज्ञान / धन / तप आदि किसी भी क्षेत्र में दूसरों की बढ़ोतरी देखकर प्रसन्न होने वाला, ईर्ष्या न करने वाला।
2. दूसरों को आगे बढ़ने में सहयोग देने वाला।
3. दूसरों के गुणों की यथावसर प्रशंसा करने वाला।
4. दूसरों के गुणों को सुनकर उसे गलत साबित करने का प्रयास न करने वाला। गलत साबित करने का प्रयास इस प्रकार होता है-

   Teacher - देखो श्याम! हरि ने कैसे तपाक से प्रश्न का उत्तर दे दिया, इसे कहते हैं हाजिर जवाबी।

   Shyam - अरे Ma'am! हरि में इतनी अक्ल नहीं है कि वह तुरंत जवाब दे दे। जरूर उसने पहले किसी से प्रश्न का उत्तर सुन रखा होगा।
5. गुणी पुरुषों को अपना आदर्श मानने वाला और यह विचार करने वाला कि इन गुणी व्यक्तियों के समीप रहना मेरा अहोभाग्य है जिससे सदैव मुझे भी जीवन विकास की प्रेरणा मिलती रहती है।

देवायु- जिस कर्म के उदय से आत्मा अमुक समय तक देव गति में रुकी रहे उसे देवायु कर्म कहते हैं।

देव आयु बंध के 4 कारण-

1. सराग संयम पालने से
2. देश संयम पालने से
3. बाल तपस्या करने से
4. अकाम निर्जरा करने से

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

1. **सराग संयम**- सराग = जो राग (कषाय) सहित है, संयम = साधु जीवन अर्थात् 5 महाव्रतों की शुद्ध आराधना करना। 5 महाव्रतों की शुद्ध आराधना करने वाले सराग संयमी जीव देव आयु का ही बंध करते हैं। **नोट**- [वीतरागी भगवन् आयु कर्म का बंध नहीं करते]
2. **देश संयम**- देश संयम = व्रतधारी श्रावक। 1 व्रतधारी से लेकर 12 व्रतधारी श्रावक देव आयु का ही बंध करते हैं।
3. **बाल तपस्या**- बाल = अज्ञान। ज्ञानरहित तपस्या करने वाले जीव तपस्या आदि द्वारा पुण्य का उपार्जन करके देवायु का बंध कर सकते हैं। यथा-

   1. कोई संन्यासी मासखमण की तपस्या करता है फिर पारणे में कुश (तिनके) के अग्रभाग पर आये उतना आहार ग्रहण करता है, पुनः मासखमण की तपस्या करता है इस प्रकार वह जिन्दगी भर करता है परन्तु यदि उसे धर्म का सही बोध नहीं है वह सिर्फ स्वर्ग में सुख या मान प्रतिष्ठा आदि के लिए यह सब करता है तो उसकी वह तपस्या बाल तपस्या कहलाती है। इस प्रकार की तपस्या द्वारा व्यक्ति देव आयु का बंध कर सकता है परन्तु मोक्ष की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता।
4. **अकाम निर्जरा**- अकाम = बिना इच्छा के। बिना इच्छा के भी लम्बे समय तक कष्टों को सहन करने या पुण्य उपार्जन का कार्य करने से भी देवायु का बंध हो सकता है।

नाम कर्म

नाम कर्म- जिस कर्म के उदय से जीव को शुभाशुभ गति, जाति, रूप आदि की प्राप्ति होती है उसे नाम कर्म कहते हैं।

नाम कर्म बंध के 8 कारण

शुभ नामकर्म बंध के 4 कारण

अशुभ नामकर्म बंध के 4 कारण = 8

शुभ नामकर्म- जिस कर्म के उदय से जीव को शुभ गति, जाति, रूप आदि की प्राप्ति होती है उसे शुभ नाम कर्म कहते हैं।

शुभ नामकर्म बंध के 4 कारण

1. काया की सरलता से
2. वचन की सरलता से
3. भावों की सरलता से
4. विसंवाद रहितता से

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

1. **काया की सरलता** = सहज निष्कपट भाव से काय चेष्टा करना, दूसरों को ठगने के लिए काय चेष्टा नहीं करना।
2. **वचन की सरलता** = सहज निष्कपट भाव से वचनों का प्रयोग करना, दूसरों को ठगने के लिए वचनों का प्रयोग नहीं करना।
3. **भावों की सरलता** = सहज निष्कपट भाव से मन में विचार करना। दूसरों को ठगने के लिए मन में विचार नहीं करना।
4. **विसंवाद रहितता** = कथनी करनी में एकरूपता होना।

शुभ नामकर्म एवं अशुभ नामकर्म दोनों के कर्म बंध के कारण परस्पर विपरीत है अतः दोनों का विस्तृत वर्णन न करके सिर्फ अशुभ नामकर्म का विस्तृत वर्णन आगे किया जा रहा है।

अशुभ नामकर्म- जिस कर्म के उदय से जीव को अशुभ गति, जाति, रूप आदि की प्राप्ति होती है उसे अशुभ नामकर्म कहते हैं।

अशुभ नामकर्म बंध के 4 कारण

1. काया की वक्रता से
2. वचन की वक्रता से
3. भावों की वक्रता से
4. विसंवाद वक्रता से

आओ! इनके बारे में विस्तार से जानें-

1. **काया की वक्रता से** = वक्रता-टेढ़ापन। दूसरों को ठगने के लिए काय चेष्टा करना, अर्थात् शरीर से दिखावटी क्रिया करना, शरीर के द्वारा वास्तविकता को छिपाने का प्रयास करना।
2. **वचन की वक्रता से** = वक्रता-टेढ़ापन। दूसरों को ठगने के भाव से वचन बोलना अर्थात् मन में कुछ और रखते हुए दिखावटी रूप से अच्छे वचन बोलना।
3. **भावों की वक्रता से** = दूसरों को ठगने के लिए मन में विचार करना।
4. **विसंवाद योग युक्तता से** = कथनी करनी में एकरूपता न होना।

काया की वक्रता से अशुभ नाम कर्म का बंध होता है। यथा-

1. सास/बहू को कोई काम करने की इच्छा न हो तो मेरी तबीयत ठीक नहीं है यह दर्शाने के लिए सिर पर कपड़ा बांध लेना, बाम/आयोडेक्स लगाना, नाक से सूं-सूं करते रहना, चलते-चलते लड़खड़ाना आदि।
2. दूसरों को लगे कि यह कितनी पढ़ाई करता है इसलिये किताब खोलकर बैठ जाना, परन्तु किताब के बीच में मोबाइल रखकर Game खेलना या दोस्तों को Message, Whatsapp करना आदि।
3. दूसरों के समक्ष अपने आपको धनवान दिखाने के लिए नकली या किराये के आभूषण आदि पहनना।
4. वस्तुतः रूप सुन्दर न होने पर भी क्रीम पाउडर आदि लगाकर सुन्दर दिखने का प्रयास करना, शरीर से दुर्गन्ध निकलती हो तो परफ्यूम लगाकर अपने आपको सुगन्धित (Fragrant) करना।
5. मैं कितनी सेवा करता हूँ, गुरु / माता-पिता / सास-ससूर आदि का कितना ध्यान रखता हूँ, यह दर्शाने के लिए जब बाहर से कोई दर्शनार्थी मेहमान आये तब उन्हें दवाई-पानी आदि लाकर देना, खांसी हो रही हो तो उनके पीठ पर हाथ फेरना, उठ रहे हो तो हाथ पकड़ना आदि।

वचन की वक्रता से अशुभ नामकर्म का बंध होता है। यथा-

1. निजी स्वार्थ के खातिर सत्य को इस प्रकार कहना जिससे प्रतिद्वंदी (Competitor) निराश-हताश हो जाए और हमें लाभ हो।
2. भीतर में यह है कि मेरा बेटा या मेरे परिवार से कोई दीक्षा न लेवे फिर भी ऊपर से म. सा. के सामने इस प्रकार कहना कि परिवार से कोई भी दीक्षा लेवे तो मेरी तो हाँ है, मैं तो चाहता ही हूँ मेरे खानदान को कोई रोशन करे आदि।
3. अपना उल्लू सीधा करने के लिए (काम निकालने के लिए) किसी की खूब तारीफ करना। सभा के बीच में उसकी जय-जयकार करना एवं पीठ पीछे उसकी निन्दा करना।
4. म. सा. के आज तपस्या का पारणा है, यदि संयोग से म. सा. हमारे घर पधारे तो हम तैयारी करके रखें यह सोचकर सेठानी जी ने उकाली, केर, मूंग बनाकर रखे। संयोग से म. सा. का पदार्पण भी उसी घर में हो गया। म. सा. शुद्ध आहार-पानी की गवैषणा करते हुए पूछने लगे-

आओ! इसे संवाद से जानें-

संवाद-I : म.सा. का श्राविका जी के साथ विसंवाद-

म. सा. - बहनजी आज उकाली क्यों बनाई है?

सेठानी जी झूठ भी बोलना नहीं चाहती और म. सा. को बहराना भी है इसलिए सच भी बोलना नहीं चाहती, आखिर उसने उत्तर भी सोच रखा था उसने तुरन्त सेठजी की ओर इशारा किया-

बहन जी - (सेठजी उस समय खांस ही रहे थे)- बापजी इनकी तबीयत ठीक नहीं है (यह कहकर रोने लग गई, जिससे म. सा. आगे कुछ पूछ ही नहीं सके)।

म.सा. ने प्रश्न बदलते हुए पूछा- बहन जी ये मूंग-केर किसके लिये बनाये? आज किसी का पारणा है क्या?

बहनजी - मेरे बेटे को केर-मूंग बहुत पसंद है इसलिए हमारे घर में केर-मूंग बनते ही रहते हैं।

संत-महापुरुष भी ज्ञानी थे उन्होंने ज्यादा कुछ नहीं पूछा- और सूखे खाखरे से हाथ फरसकर लौट गये। बहन ने भले ही सीधा झूठ नहीं बोला परन्तु वचन की वक्रता के कारण अशुभ नामकर्म का बंध कर लिया।

5. विवाद होने पर घटना का इस तरह बयान करना जिसमें स्वयं की गलती या विवाद बढ़ाने में स्वयं की भूमिका छिप जाए परिणामस्वरूप सारा दोषारोपण दूसरे पक्ष पर कर देना।

भावों की वक्रता से अशुभ नामकर्म का बंध होता है। यथा-

भावों में वक्रता होने पर ही काय व वचन में वक्रता आती है, अतः काय की वक्रता व वचन की वक्रता के सभी Point भावों की वक्रता में भी समझ लेना चाहिए।

विसंवाद योग युक्तता से अशुभ नामकर्म का बंध होता है। यथा-

आओ! इसे संवाद से जानें-

संवाद-I : म.सा का श्रावकजी के साथ विसंवाद-

म. सा.- क्यों श्रावक जी, आपकी श्रीमती जी दोपहर की क्लास में क्यों नहीं आते?

श्रावक जी- बापजी! मैं तो बहुत बोलता हूँ ज्ञान कक्षा में जाया करो ज्ञान बढेगा, पर नहीं आये तो ज्यादा तो बोल नहीं सकते।

म. सा.- श्रावक जी आप दोपहर में खाना खाने घर कब जाते हैं?

श्रावक जी- 2½ (ढाई) बजे।

म. सा.- दोपहर क्लास का टाइम ही 2½ बजे का है, आप इतना लेट खाना खाने जायेंगे तो श्राविका जी कैसे क्लास में आयेंगी?

श्रावक जी- नहीं बापजी, उसमें कोई दिक्कत नहीं है मैं तो अपने हाथ से लेकर खा लूंगा, मैं क्यों उनके ज्ञान में अंतराय दूं?

म. सा.- वाह! श्रावक जी आपकी भावना बहुत श्रेष्ठ है, आप श्राविका जी को प्रेरणा देंगे तो वह आ सकते हैं।

श्रावक जी- ठीक है बापजी, मैं अभी घर जाकर उन्हें क्लास में आने के लिए प्रेरणा करता हूँ।

श्रावक जी घर पहुँचकर अपनी पत्नी रेखा को बोलते हैं-

रेखा! आज म. सा. से ऐसी-ऐसी बात हुई है देख मेरी तो अपने हाथ से लेकर खाने की आदत नहीं है, पर म. सा. के सामने क्या बोलता? तू कल प्रवचन में जायेगी तब म. सा. तेरे से पूछेंगे तो तू बोल देना श्रावक जी तो अपने हाथ से लेकर खाना खा लेंगे लेकिन मुझे उस समय यह-यह काम रहता है इसलिए मैं नहीं आ सकती।

गोत्र कर्म

गोत्र कर्म- जिस कर्म के उदय से जीव उच्च या नीच शब्दों से पुकारने योग्य गुणों से युक्त हो उसे गोत्र कर्म कहते हैं।

गोत्र कर्म बंध के 16 कारण

उच्च गोत्र कर्म बंध के 8

नीच गोत्र कर्म बंध के 8 = 16

उच्च गोत्र- जिस कर्म के उदय से जीव उच्च शब्दों से पुकारने योग्य गुणों से युक्त हो उसे उच्च गोत्र कर्म कहते हैं।

उच्च गोत्र कर्म बंध के 8 कारण

1. जाति का मद न करने से
2. कुल का मद न करने से
3. बल का मद न करने से
4. रूप का मद न करने से
5. तप का मद न करने से
6. श्रुत का मद न करने से
7. लाभ का मद न करने से
8. ऐश्वर्य का मद न करने से

नीच गोत्र– जिस कर्म के उदय से जीव नीच शब्दों से पुकारने योग्य गुणों से युक्त हो उसे नीच गोत्र कर्म कहते हैं।

नीच गोत्र कर्म बंध के 8 कारण–

1. जाति का मद करने से
2. कुल का मद करने से
3. बल का मद करने से
4. रूप का मद करने से
5. तप का मद करने से
6. श्रुत का मद करने से
7. लाभ का मद करने से
8. ऐश्वर्य का मद करने से

उच्च गोत्र एवं नीच गोत्र दोनों कर्म बंध के कारण परस्पर विपरीत है। अत: यहाँ दोनों कर्म बंध के कारणों का विस्तृत वर्णन न करके सिर्फ नीच गोत्र कर्म बंध के कारणों का विस्तृत वर्णन किया जा रहा है।

जाति / कुल का मद (अभिमान) करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. स्वजाति/स्वकुल को सर्वश्रेष्ठ एवं दूसरे जाति / कुलों को हीन समझना तथा उनके प्रति द्वेष रखना।
2. कुछ संस्कारों के बारे में अभिमान से इस प्रकार कहना कि यह संस्कार तो हमारे जाति / कुल में जन्म-जात आनुवांशिक से विद्यमान है।
3. चोरी आदि कुछ भी होने पर बिना प्रमाण के सिर्फ नीच जाति / कुल के कारण किसी व्यक्ति पर मिथ्या आरोप लगाना।
4. स्वजाति / कुल में यदि पढ़े-लिखें हो तो अभिमान करना कि हमारे कुल में बहुत पढ़े-लिखे हैं।
5. स्त्रियों को ताना / उपालम्भ देना कि तुम्हारे जाति/कुल में वैसा होता है परन्तु यह ऊँचा घराना है यहाँ इस तरह से काम नहीं चलेगा।
6. अन्य जाति / कुल के बारे में हीन धारणा रखना तथा नीच जातियों / कुलों के कुछ घटित कुकृत्यों को लोगों में प्रचारित करना जिससे लोगों के मन में भी उनके प्रति घृणा के भाव पैदा हो जाये।

बल का मद करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. मुझ जैसा बलशाली कौन है? किसकी मां ने सवासेर सोंठ खाई है आ जाये मेरे सामने।
2. दुर्बल का मजाक उड़ाना- कैसा मरियल है?
3. मुझे आज तक कोई बीमारी नहीं हुई, बीमारी मेरे से कोसों दूर भागती है।
4. बल के आधार पर समाज में सिक्का जमाना, कम बल वालों को संताप देना।
5. जिस प्रकार मैं शारीरिक बल से अस्त्र-शस्त्र विद्या ग्रहण करता हूँ वैसा कोई अन्य नहीं कर सकता- ऐसी धारणा रखना।
6. मैं चाहे जो कर सकता हूँ मुझे कौन रोकेगा? ऐसा मान भरा विचार या कथन करना।

रूप का मद करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. अपने सुन्दर रूप का घमंड करना तथा हीन रूप वालों का परिहास (Mockery) करना।
2. रूप दिखाकर पापजन्य कार्यों को करना या कराना।
3. रूप के आधार पर व्यवसाय/नौकरी आदि में तरक्की पाना या पाने की चेष्टा करना।
4. दूसरों का मूल्यांकन केवल रूप के आधार पर करना।
5. रूप को बनाए रखने के लिए या और अधिक निखारने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करना- जिसमें कई बार हिंसा युक्त प्रसाधनों का इस्तेमाल होता है।
6. अपने चेहरे को बार-बार दर्पण में देखना व देखकर खुश होना।

तप का मद करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. 12 प्रकार के तप में से किसी भी प्रकार के तप में अपने आपको सबसे आदर्श तपस्वी मानना, स्वयं या दूसरों के माध्यम से अपनी तपस्या का प्रचार-प्रसार करना।
2. मैं इतना बड़ा तपस्वी हूँ, मेरा अभिनन्दन, यशोगान तो होना ही चाहिए, मेरे समक्ष दूसरे तपस्वियों की यशोगाथा तो बेकार है। सूर्य को दीपक दिखाने के बराबर है- इस प्रकार विचार या कथन करना।
3. मेरे जैसी तपस्वियों की सेवा तो महाभाग्यशाली लोगों को प्राप्त होती है, फिर भी जो सेवा के लाभ से वंचित रहे उससे बड़ा दुर्भाग्यशाली दूसरा कौन होगा।
4. जो लोग शारीरिक या मानसिक दुर्बलता के कारण तपस्या नहीं कर पाते उन्हें कमजोर, डरपोक, चटकोरा आदि कहकर उनका उपहास करना तथा इस प्रकार कहना कि मुझे देखकर तुम लोगों में थोड़ी तो अक्ल आनी चाहिए।
5. जो लोग तपस्या करना चाहते हैं वे मेरा आशीर्वाद/मांगलिक ले लेंवें। मेरे प्रभाव से तपस्या के सारे विघ्न स्वतः दूर हो जायेंगे। जो मेरे से पच्चक्खाण करता है उसकी तपस्या बहुत आराम से होती है।
6. अपने तप का कीर्तिमान स्थापित करने के लिए तथा मेरे से बढ़कर आगे कोई कर न सके यह सोचकर आगे तपस्या करते रहना।

लाभ का मद करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. किसी भी प्रकार का लाभ होने पर अहंकार भाव रखना कि मैं कितना धर्मिष्ठ हूँ, बुद्धिशाली या पुण्यशाली हूँ। जहाँ हाथ डालता हूँ वहाँ सफलता मेरे कदम चूमती है। अरे! मेरे साथ जो रहता है वह भी निश्चित रूप से सफल होता है।
2. अपनी सफलता का यशोगान करना तथा दूसरे असफल व्यक्तियों को हीन तुच्छ समझना। अपने लाभ (सफलता) की कहानी सुनाकर दूसरों का जी ललचाना।
3. अपने आपको सबसे अधिक धर्म का लाभ लेने वाला समझना। जो लोग प्रवचन या सामायिक ना करते हों, उन्हें जरा भी धर्म के संस्कार नहीं है, जीवन में इतना पाप करते हो, तुम्हारी क्या गति होगी? ऐसा कहना या समझना।
4. लाभ के मद में आँखों पर लालच का पर्दा पड़ जाना जिससे स्वविवेक भूल जाना तथा येन-केन-प्रकारेण लाभ के लिए प्रयत्नशील रहना।
5. अच्छी नौकरी या विदेश में नौकरी मिलने पर ऐसा विचारना कि यह (भारत) देश, यहाँ के लोग, यहाँ का रहन-सहन सब घटिया, गंदा, हीन है आदि।
6. दूसरों के अधिक लाभ को देखकर जलन होना, दूसरों को अपने से नीचा दिखाने का प्रयास करना।

श्रुत का मद करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. किसी भी विषय में अपने आपको सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी समझना, मेरे से टक्कर लेने वाला दुनिया में कोई नहीं है ऐसा कथन करना।
2. अपने ज्ञान के मद में दूसरों को कहना, यह तो एक बच्चा भी कर सकता है, आपसे इतना भी नहीं होता।
3. मेरा पढ़ाने का तरीका सबसे निराला है, मेरे जैसे सरल व आधुनिक शैली से दूसरा कोई नहीं पढ़ा सकता।
4. अपनी ऊँची डिग्री (C.A, M.B.A, M.D, etc.) का मद करना तथा मंद बुद्धि वालों का उपहास करना, अपमान करना। यथा- अनपढ़/अज्ञानी/मूर्ख लोगों का जीना ही बेकार है, ध रती पर बोझ है आदि।
5. कोई अपने विचार प्रकट करे तो उसे टोकना- आप नहीं समझते हो, यह विषय बहुत जटिल है, आपके बस का नहीं है।
6. अब इस वय में क्या सीखोगे, अब तुम्हारी बुद्धि सठिया गई है- इस प्रकार कथन करना।

ऐश्वर्य का मद करने से नीच गोत्र का बंध होता है। यथा-

1. अपने ऐश्वर्य पर गर्व करना, लोगों के सामने अपने ऐश्वर्य का प्रदर्शन करना, यथा-बहुत लोग Function आदि में ऊँची Quality के वस्त्र-आभूषणादि पहनकर आते हैं भले ही वे किराये के ही क्यों न हो?
2. अपने से अधिक ऐश्वर्य वाले से द्वेष करना व कम ऐश्वर्य वाले को हीन समझना, उन्हें धरती पर बोझ समझना।
3. ऐश्वर्य के आधार पर लोगों का मान-सम्मान करना या उनके बारे में धारणा बनाना।
4. ऐश्वर्य के मद में अमर्यादित आचरण करना- घर, कानून, समाज आदि को बेकार बताकर मनमाना आचरण करना।
5. जीवन में केवल एकमात्र लक्ष्य- ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं उसे बनाए रखना या बढ़ाना- ऐसा विचार रखना।
6. ऐसी धारणा रखना कि गरीबों के कारण ही गंदगी, बीमारी होती है या फैलती है आदि।

अन्तराय कर्म

अंतराय कर्म- अन्तराय = विघ्न, बाधा। जिस कर्म के उदय से जीव को दानादि में विघ्न उपस्थित हो उसे अन्तराय कर्म कहते हैं।

अन्तराय कर्म बंध के 5 कारण-

1. दान में अन्तराय देने से
2. लाभ में अन्तराय देने से
3. भोग में अन्तराय देने से
4. उपभोग में अन्तराय देने से
5. वीर्य में अन्तराय देने से

अन्तराय = विघ्न।

भोग = एक बार भोगने योग्य वस्तु।

उपभोग = बार-बार भोगने योग्य वस्तु।

वीर्य = पुरुषार्थ।

I. दान में अन्तराय देने से दानान्तराय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. रक्तदान, नेत्रदान आदि करने के लिए मना करना।

नोट- जिस प्रकार पुत्र के नाम वसीयत लिखने के पश्चात् संथारा ग्रहण किया जा सकता है। उसी प्रकार Eye Donetion फार्म भरने के पश्चात संथारा ग्रहण किया जा सकता है। परन्तु जैसे- संथारे की अवस्था में किसी के नाम वसीयत नहीं लिखी जा सकती है उसी प्रकार संथारे की अवस्था में Eye Donation फार्म नहीं भर सकते हैं।

2. जो व्यक्ति संघ/समाज में पैसा देना चाहता है उसे बहुत बार घर के सदस्य या अन्य व्यक्ति इस प्रकार कहते हैं- अरे! इतना पैसा देने की क्या आवश्यकता है इससे कम देंगे तो भी चलेगा आदि।
3. कोई व्यक्ति दानशाला प्याऊ आदि खोलना चाहता है तो उसे ऐसा करने से मना करना।
4. किसी व्यक्ति की यदि ऐसी आदत है कि जो भी याचक आता है उसे वह खाली हाथ नहीं भेजता, ऐसे में उसके परिवार या अन्य सदस्य इस प्रकार कहते हैं कि ''यदि ऐसे सबको लुटाता रहेगा तो एक दिन तू ही भिखारी न बन जाये।''
5. कोई व्यक्ति धार्मिक संस्था में दान देना चाहता है तो बहुत बार दूसरे व्यक्ति कहते हैं अरे! ''यहाँ पैसा लगायेगा तो भी तेरा नाम होने वाला नहीं है अत: ऐसी जगह पैसा दे जहाँ तेरा नाम हो, समाज के लोगों में तेरा दबदबा हो'' आदि।
6. कोई किसी स्वधर्मी भाई आदि को सहयोग देना चाहता है तो कहना- अरे! इसके भाग्य अच्छे नहीं है, आप इसको कितना भी दे दो यह आगे बढ़ने वाला नहीं है, फालतू के पैसे डुबाने से क्या फायदा?
7. किसी के द्वारा दान में कम पैसे दिये जाने पर उसकी निन्दा करना, जिससे बहुत बार वह व्यक्ति भविष्य में दान देना ही बंद कर देता है।

II. लाभ में अन्तराय देने से लाभान्तराय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. किसी भी उपाय से किसी की व्यवसायिक मीटिंग आदि विफल कराना ताकि अमुक पक्ष को लाभ ना पहुँच सके।
2. शेयर बाजार में शेयरों की खरीदी-बिक्री आदि विषयों पर विपरीत जानकारी देना जिससे लाभ के बजाय नुकसान हो।
3. अच्छा रिश्ता आने से किसी की अच्छी स्थिति बनती हो तो उसमें बाधा उत्पन्न करना।
4. सरकार द्वारा अमुक श्रेणी के लोगों को दी जाने वाली अनुदान राशि को हड़प जाना।
5. बड़े-बड़े प्रोजेक्ट रुकवाने के लिए लोकल लोगों को भड़काना या कोर्ट में केस करना।
6. किसी को नौकरी मिलने में रोड़ा अटकाना।
7. पारिवारिक सम्पत्ति के बंटवारों या Partnership में परस्पर बंटवारे के समय स्वयं ज्यादा सम्पत्ति रखना, दूसरों को कम देना।
8. दूसरे व्यापारियों के ग्राहकों को भड़काकर या अनीतिपूर्वक अपनी तरफ खींचना।
9. दान में अन्तराय देने वाले व्यक्ति को दानान्तराय के साथ-साथ लाभान्तराय का बंध भी होता है क्योंकि जो व्यक्ति जिसे दान देने वाला था उसे लाभ में बाधा उत्पन्न होती है।

III. भोग में अन्तराय देने से भोगान्तराय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. गाय, कुत्ते आदि को रोटी खिलाकर ललचाना पर खिलाना नहीं, इसी प्रकार छोटे बच्चों को, दोस्तों को या अन्य किसी को भी चॉकलेट-आइसक्रीम आदि दिखाकर ललचाना पर देना नहीं या कुछ समय ललचाकर फिर बाद में देना।
2. कबूतर, कुत्ता आदि कोई भी पशु-पक्षी कुछ खा रहे हो, उसी वक्त पत्थर मारकर भगा देना या उड़ा देना।
3. एक ही गांव में साधु-सन्तों के 2-3 सिंघाड़ों (Groups) का एक साथ आगमन होने पर अरे! वह सिंघाड़ा पहले पानी-गोचरी न ले आवे अतः स्वयं पहले जाकर ले आना।
4. संविभाग पूर्वक आहार न करने पर, आचार्य, रोगी, तपस्वी आदि के अनुकूल आहार को उन्हें न देकर स्वयं भोगना।
5. साथ में बैठे हुए व्यक्तियों में से किसी एक व्यक्ति ने पानी मंगवाया परन्तु पानी आने पर जानते हुए भी दूसरे व्यक्ति द्वारा पानी पी लेना।
6. म. सा. गोचरी करने जा रहे हो या कर रहे हों उस समय दर्शन या मांगलिक आदि के लिए निवेदन करना।
7. जहाँ पानी की कमी है वहाँ अधिकांश पानी स्वयं वापरना। अन्य के लिए नहीं छोड़ना या थोड़ा छोड़ना।
8. स्कूल में एक दूसरे का टिफिन छीन लेना या खा लेना।
9. कोई व्यक्ति खाना खा रहा हो तब उसे बीच में काम बताना जिससे उसे खाते हुए बीच में उठना पड़े, जैसे बहुत बार ऐसा होता है कि जब घर का नौकर खाना खा रहा हो तब घर में घंटी बजते ही मालिक नौकर को कहता है 'जा पहले दरवाजा खोल दे।'

IV. उपभोग में अन्तराय देने से उपभोगान्तराय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. गरीबों के घर उजाड़ना या किसी को घर या जमीन खरीदने में बाधा उत्पन्न करना।
2. मकड़ी का जाला, चिड़िया का घोंसला इत्यादि तोड़ना।
3. शादी-ब्याह आदि में देखा जाता है कि 2-3 व्यक्ति कई कुर्सियों को रोके रखते हैं इससे दूसरे व्यक्तियों को बैठने में असुविधा होती है।
4. परिवार में दूसरी महिलाओं, बच्चों आदि को आभूषण आदि धारण करने में विघ्न डालना।
5. घर में समान आयु वाले बच्चे हों। सबके लिए लाये हुए पेपर / नोटबुक / पेंसिल आदि अधिक से अधिक स्वयं ले लेना।
6. योग्य व्यक्ति की कुर्सी (सत्ता) छीनकर खुद पद पर बैठना या अपने प्रिय को बिठाना-यथा- कैकेयी माता ने श्री राम को सिंहासन पर नहीं बैठने दिया।
7. किसी की वस्तु को ईर्ष्यावश खराब कर देना।
8. शादी-ब्याह या सामाजिक कार्यों में अतिथियों द्वारा बिस्तर, तकिये आदि का दुरूपयोग या दुर्दशा करना।
9. किसी के अच्छे नौकर को अधिक पैसे देकर अपने घर / दुकान में ले आना या ईर्ष्यावश नौकर को मालिक के प्रति भड़काकर काम छोड़ने के लिए प्रेरित करना।

V. वीर्य में अन्तराय देने से वीर्यान्तराय कर्म का बंध होता है। यथा-

1. किसी को तपस्या आदि करने से रोकना या निरुत्साहित करना।
2. सामाजिक या धार्मिक क्रियाएं करने वाले को बाधा उत्पन्न करना या उससे व्यर्थ की चर्चा करना।
3. संयम जीवन स्वीकार करने के इच्छुक व्यक्ति को किसी भी उपाय से रोकने का प्रयास करना।
4. शक्ति होते हुए भी धार्मिक क्रियाओं में प्रमाद करना, साधु-साध्वी की सेवा न करना।
5. समाज सेवा या शुभ कार्य करते हुए व्यक्ति को यह कहकर रोकना कि अन्त में अपयश ही मिलेगा।
6. किसी के प्रति हुए अन्याय के खिलाफ न्याय नीति से लड़ने वालों को हतोत्साहित करना कि क्यों लफड़े में पड़ता है?
7. एक्सीडेंट में घायल हुए व्यक्ति की स्वयं सहायता ना करना तथा दूसरा करता हो तो उसे मना करना कि क्यों पुलिस / अस्पताल के लफड़े में पड़ता है?
8. गरीब, बालक, वृद्ध, बीमार या पशुओं की किसी भी प्रकार से सेवा करने वाले व्यक्ति को सेवा करने से रोकना।
9. दान, लाभ, भोग, उपभोग आदि सभी कार्य पुरुषार्थ से ही होते हैं अतः किसी में भी अन्तराय देने से वीर्यान्तराय कर्म का भी बंध होता है।

उपसंहार

प्रस्तुत पुस्तक में ज्ञानावरणीय आदि जिन-जिन कर्मों के प्रसंग में जो-जो बिन्दु लिखे गये हैं इसका मतलब यह न समझें कि उस कार्य से सिर्फ वह एक ही कर्म बंधेगा, एक ही कार्य से अनेक कर्म बंधन हो सकते हैं। यथा- कोई सासू घर में सदैव अपनी बहु को प्रेरणा देती रहती है कि धर्मस्थान में जाकर ज्ञान-ध्यान सीखो आदि। उसकी प्रेरणा से बहू धर्मस्थान जाकर काफी ज्ञान-ध्यान सीखने लगी, इससे सासू के मन में थोड़ी ईर्ष्या होने लगी। अरे! यह तो मेरे से आगे बढ़ने लग गई, मेरे से ज्यादा इसका नाम हो गया। एक बार उसकी बहू जब उत्कृष्ट भावना से ध र्मस्थान जाने हेतु तैयार हो गई और उसने अपनी सासूजी से कहा, मम्मी जी मैं धर्मस्थान जाकर सामायिक करके आ जाऊं? तब सासू ने ईर्ष्यावश उसे धर्मस्थान में जाने से मना कर दिया। सासू बहू को जाने से मना करने पर सिर्फ 1 ही कर्म का बंध नहीं करती अपितु आयुष्य को छोड़कर शेष सातों कर्मों का अवश्य रूप से बंध करती है-

1. स्थानक जाने से ज्ञान वृद्धि होती है परन्तु मना करने से ज्ञान में अन्तराय लगती है अत: ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करती है।
2. ज्ञानावरणीय कर्म के साथ दर्शनावरणीय कर्म का अनिवार्य रूप से बंध होगा ही क्योंकि जहाँ ज्ञान में अन्तराय है वहाँ दर्शन में भी अन्तराय है ही।
3. बहू को जाने के लिए मना करने से बहू को दु:ख होता है। अत: असातावेदनीय कर्म का बंध होता है।
4. सासू द्वेष के कारण से मना कर रही है अत: मोहनीय कर्म का बंध भी अवश्य होगा।
5. सासू ऊपर से धर्म की प्रेरणा देती है और मौका आने पर मना कर देती है इस प्रकार कहना कुछ और करना कुछ अर्थात् विसंवाद योग के कारण अशुभ नामकर्म का बंध करती है।
6. सासू अपने पद / बल का मद करके उसका दुरुपयोग करती हुई बहू को मना कर रही है, इसलिए नीच गोत्र का बंध करती है।
7. सम्यक् पुरुषार्थ करने में अन्तराय देने से अन्तराय कर्म का बंध करती है।

सारांश यह है कि पुस्तक में स्पष्ट व सरलता से समझने के लिए किसी एक कर्म की प्रध ानता से वर्णन किया गया है परन्तु उस कर्म के साथ-साथ उससे जुड़े हुए अन्य सातों कर्मों का बंध भी निश्चित रूप से होता है।

आयुष्य का बंध जीवन में एक बार ही होता है अतः जब आयुष्य कर्म का बंध होता है तब आठ कर्मों का बंध होता है एवं जब आयुष्य कर्म का बंध नहीं हो रहा हो तब सात कर्मों का बंध होता है इस प्रकार समझना चाहिए।

❑❑❑